Website : www.akhilbharathindumahasabha.org
E-mail : editor.hindusabhavarta@akhilbharathindumahasabha.org
प्रत्येक बुधवार को प्रकाशित
प्रति अंक मूल्य 4 रुपये

साप्ताहिक
हिन्दू सभा वार्ता

अखिल भारत
हिन्दू महासभा का मुखपत्र

वर्ष- 41 अंक-36 | सम्पादक | दिनांक 29 नवम्बर से 05 दिसम्बर 2017 तक | वार्षिक शुल्क 150 रुपये
कल्पादि सम्वत् 1972949117 | मुन्ना कुमार शर्मा | मार्गशीर्ष शुक्ल दशमी से पौष कृष्ण द्वितीया 2074 तक | पृष्ठ संख्या 12

राजधानी ही क्यों..... पृष्ठ- 3
मधुमेह रोगी और... पृष्ठ- 4
क्या मानव जीवन..... पृष्ठ- 5
इतिहास स्वयं को.... पृष्ठ- 9
चीन को अब चाहिए... पृष्ठ- 12

- कालेधन का एक और काला कारनामा
- अदालती और न्याय सुधार शीघ्र हो
- हिन्दू राष्ट्र के स्वप्न द्रष्टा देवता स्वरूप भाई परमानन्द जी
- बढ़ती मुस्लिम आबादी चिन्तन शील विषय
- हिंदुत्व के मूल तत्वों को पहचानों

२०१६ में आतंकवादी हमले में २५६७३ लोगों की मौत, ७७ देशों में आतंकवादियों ने बनाई पैठ

विश्व समुदाय को मिलकर खोजना होगा हल–हिन्दू महासभा

● संवाददाता ●

लंदन आतंकवादी हमलों में मारे गए लोगों की संख्या में वर्ष २०१६ में लगातार दूसरे साल कमी आई है लेकिन इससे प्रभावित हुए देशों की संख्या में इजाफा हुआ है, यह जानकारी कल जारी किए गए वैश्विक आतंकवाद सूचकांक जीटीआई में दी गई। आस्ट्रेलिया के इंस्टीट्यूज फॉर इकोनमिक्स एंड पीस की ओर से पेश इस रिपोर्ट में पाया गया कि आतंकवादी हमलों के कारण पिछले साल २५६७३ लोगों की मौत हुई। इस संख्या में वर्ष २०१४ की तुलना में २२ प्रतिशत गिरावट हुई, रिपोर्ट के अनुसार मृतक संख्या में सीरिया, शेष पृष्ठ 11 पर

आतंकी संगठन इस्लामिक स्टेट ने कुंभ जैसे मेलों में लोन वुल्फ अटैक की चेतावनी दी

इस्लामिक स्टेट का वैश्विक स्तर पर हो सफाया–हिन्दू महासभा

● संवाददाता ●

दुनिया के सबसे खूंखार आतंकी संगठन इस्लामिक स्टेट ने आने वाले दिनों में भारत में लोन–वुल्फ हमले की धमकी दी है। मीडिया रिपोर्टों के मुताबिक १० मिनट लंबी ऑडियो क्लिप मलयालम भाषा में रिलीज की गई है और उसमें कुंभ मेले और केरल के त्रिसूर पुरम जैसे लोकप्रिय त्योहारों में भीड़ पर अमेरिका के लास–वेगास जैसे लोन वुल्फ हमले के लिए कहा गया है। इस पुरुष आवाज में कुरान की कई आयतों का जिक्र करने के साथ ही भारत में आतंकी हमले की बात कही गई। यह इस क्षेत्र में सक्रिय आइएस के संगठन दौलातुल इस्लाम का ५०वां ऑडियो क्लिप है। इस क्लिप में लास वेगास शूटिंग का साफ़ शब्दों में जिक्र किया गया है जहां म्यूजिक कंसर्ट में कई लोग मारे गए। इस क्लिप में लोन वुल्फ हमले के लिए प्रेरित करते हुए कहा गया है, अपने दिमाग का इस्तेमाल करो। उनके खाने में जहर मिला दो। ट्रकों का इस्तेमाल करो, महाकुंभ मेले या त्रिसूर पुरम में गाड़ी उनके ऊपर चढ़ा दो। आईएस मुजाहिदीनों ने दुनिया के कई हिस्सों में इस तरह की घटनाओं को अंजाम दिया है। लास वेगास में एक हमारे समर्थक ने म्यूजिक कंसर्ट में हमलाकर कई लोगों को मौत के घाट उतार शेष पृष्ठ 11 पर

''परमात्मा और प्रकृति तथा जीव''

वेद में ईश, प्रकृति तथा जीव तीनों ही अलग बताये हैं।
तीनों की अलग सत्ताओं में परमात्मा की सत्ता सर्वोपरि है।।
जब कोई न था प्रभु के गर्भ में विलुप्त थे, सर्वत्र अंधेरा था।
सर्वप्रथम प्रभु के अनन्त आकाश शून्य खाली बनाया था।।
जिसमें समस्त प्रकृति और जीव की माया को रचा था।
असंख्य आकाश पिण्डों निहारिकाओं–आकाश गंगाओ को बनाया।।
फिर सूरज, पृथ्वी, चाँद, तारे–सितारे नक्षत्र ब्लेक होल को बनाया।।
अग्नि, वायु, जल, मेघ–विद्युत बनाकर, असंख्य जीवों को बनाया।।
अन्न–वनस्पति, पेड़–पौधों, झरने–सोते, नदी–झील, पर्वतों को बनाया।
इस धरा पर नभचर, जलचर, थलचर, धूप–चाँदनी, वर्षा को बनाया।।
नाना प्रकार के फूल–फल, वनस्पति और जीवों से इस धरा को सजाया।
पृथ्वी को गलीचा, आकाश को तम्बू बनाकर मनमोहक स्वर्ग यहाँ बनाया।।
'रमदा' प्रभु की अपरम्पार, रहस्यमयी माया देखकर भारी चकराया।
आकाश का न आदि और न मध्य तथा न अन्त देख वेदों ने गाया।।
सभी साकार–भौतिक को नश्वर इसी खाली में विलुप्त पाया।
परमात्मा अविनाशी नित्य सर्वव्यापी को निराकार सदैव पाया।।
जो भी दृश्य–अदृश्य देख रहे, उसी प्रभु ने यह खेल किया।
शुद्ध मन–बुद्धि और आत्मा ने निष्पापी मानव बनकर प्रभु दर्शन पाया।।
सदाचारी, निर्विकारी, निरोगी बनकर होश में सद्गति पाया।
प्रभु कृपा से ब्रह्ममय बनकर मानव देह में मृत्यु पर मोक्ष पाया।।
ब्रह्मा के १०० वर्षों तक इच्छामुक्त दिव्य जीव होकर परम आनन्द पाया।
फिर मोक्ष अवधि समाप्ति पर, सृष्टि के आदि में अमैथुन युवा मानव बन आया।।
परमात्मा की न्याय व्यवस्था में कोई हस्तक्षेप नहीं, वह न्यायकारी दयालु है।
प्रभु अकाय अजन्मा सर्वज्ञ अभय सर्वत्र अगोचर अनादि सर्वदृष्टा सर्वशक्तिमान है।।
वह पूर्ण अनन्त शून्य अभय सर्वेश्वर अन्तर्यामी सृजनहार–पालनहार है।
जीवों में सर्वश्रेष्ठ मानव जीव अन्त में बनाया है।।
जिसे विलक्षण बुद्धि समझ–विवेक प्रभु ने दिया है।
इसलिए नर–नारी में विकास उन्नति पथ पर बढ़ा है।।
नर–नारी ने अपने को सुन्दर वस्त्रों से ढका है।
अन्य सभी जीव अपनी अल्प बुद्धि से नग्नावस्था में है।।
फिर भी मानव दुर्लभ शरीर पाकर भी नहीं संभल रहा है।
यारों की महफिल–कुसंगत में फंसकर पागल हो रहा है।।
भगवान भजन सत्संग सद्कर्मों में सब अच्छा हो रहा है।
प्रभु कृपा से सद्बुद्धि पाकर सुख–शान्ति है।।
मन–बुद्धि शुद्ध होकर प्रभु ध्यान से दुख दूर है।
'रमदा' ध्यान योग भगवान भक्ति में आनन्द मगन है।।
दान–पुण्य, धर्म–कर्म, परोपकार–सदकर्मों में लगा है।
सुखी वृद्धावस्था तनाव मुक्त होकर सादगी सात्विकता से है।।
झंझटों से दूर, निर्लिप्त होकर समभाव में है।
सोच–विचारकर, सूझबूझ से जीवन में चलना है।।
कम बोलकर और गम खाकर कुछ धन संकट को बचाना है।
किसी से न माँगकर प्रभु से ही माँगना लाभकारी है।।
नित्य प्रतिदिन प्रातः–सायं सोते–जागते 'ओ३म् जपना है।
'ओ३म् जाप से शक्ति–ऊर्जा से अमन–चैन समाधान है।।
सभी परेशानियाँ–दुख दूर होकर मन शान्त प्रसन्न है।
इन्द्रियों का स्वामी मन और मन का स्वामी बुद्धि को माना है।।
बुद्धि और शरीर की स्वामी आत्मा तथा आत्मा का स्वामी परमात्मा है।।

प्रोफेसर रामसिंह 'रमदा'

साप्ताहिक राशिफल

मेष : स्नेह का धागा ऐसा मजबूत बन्धन है, जिससे किसी भी व्यक्ति को बांधा जा सकता है। आप–अपने बॉस या अधिकारी से अपनी बात को खुलकर रख सकते और उसे पूरी तवज्जों दी जायेगी। कर्मचारियों की हर समस्या पर गहरी नजर रखने की आवश्यकता है।

वृष : समाज में आप–अपनी सक्रियता बनायें रखें चूँकि उसी से आपके भाग्योदय होने की सम्भावाना नजर आ रही है। बच्चों के अतीत की ओर दृष्टिपात न करें तो ही अच्छा रहेगा। अर्थ से जुड़े मामलों में अनुकूल परिणाम मिल सकते है।

मिथुन : इस सप्ताह आप जिसकी मदद करने जा रहे है, उसका निरीक्षण एंव परीक्षण अवश्य कर लें अन्यथा आप भी लपेटे में आ सकते है। जो लोग नेतृत्व से जुड़े है, उनको स्वंय पर नियन्त्र्ण करने की आवश्यकता है। कुछ लोगों के अस्वस्थ्ता के कारण कार्य अधूरे रह सकते है।

कर्क : तन व मन की निर्मलता से किया गया कोई भी कार्य हो, उसके दूरगामी परिणाम अत्यन्त अनुकूल होते है। आप–अपनी अभिव्यक्ति को रणनीति के तहत पेश करेंगे तो कामयाबी अवश्य मिलेगी। ईश्वर ने वो सब कुछ दिया है आपको जिससे आपके व्यक्तित्व का विकास हो सके।

सिंह : यह महत्वपूर्ण है कि आप जिन व्यक्तियों से समपर्क कर रहें है, वे कितने भी अच्छे क्यों न हो, प्रत्येक सम्बन्धों में मिथ्या भ्रम अवश्यंभावी है। एक बार जब मिथ्या भ्रम उत्पन्न हो जाता है, तो हमारी भावनायें विरक्त हो जाती है। रोजी व रोजगार से जुड़े मामलों में लाभ होने की सम्भावना है।

कन्या : यदि जीवन में सबकुछ सहजता से और योजनाबद्ध तरीके से होता रहेगा तो जीवन आनन्ददायक नहीं रह जायेगा। जीवन का पथ आसान नहीं होता है। शुरू से लेकर अन्त तक जीवन जिम्मेदारियों से भरा होता है।

तुला : आप–अपनी आलस्य वाली प्रवृति पर ध्यान दें क्योंकि आप–अपने दिये हुये समय पर नहीं पहुंच पाते है, जिससे आपके व्यक्तित्व पर बुरा प्रभाव पड़ता है। कुछ लोगों की आमदनी में वृद्धि होगी परन्तु खर्चे में भी वृद्धि होगी।

वृश्चिक : इस सप्ताह अधूरे कार्यो के पूरे होने का योग बन रहा है। पारिवारिक उठा–पटक का असर आपके ऑफिस के कार्यो में भी पड़ सकता है। अतीत को वर्तमान में प्रवेश न होने दे अन्यथा मन चिन्ता ग्रस्त हो सकता है। आपकी परोपकारी भावना ही आपके कल्याण का माध्यम बनेंगी।

धनु : सकारात्मक सोंच रखने से व्यवासाय व व्यापार में प्रगतिशीलता बनी रहेगी। किसी धार्मिक व्यक्ति से मुलाकात हो सकती है जिससे कुछ अनमोल जानकारियॉ प्राप्त होगी। जो आपकी जीवन यात्रा में काम आयेंगी। गृहस्थी से सम्बिधत वस्तुओं की खरीददारी करने का अवसर प्राप्त होगा।

मकर : इस समय आप गलतियों का पुतला न बने, अपनी गलतियों को सुधारने का प्रयास करें तभी आपकी प्रतिभा में निखार आयेगा। ऑफिस में किसी व्यक्ति से व्यर्थ में तनाव हो सकता है, अतः अपने–आपको संयमित रखने का प्रयास करें।

कुम्भ : यह सप्ताह आपके लिए मनोरंजनकारी रहेगा। इस समय कुछ लोगों को अपनी वाणी पर नियन्त्रण रखने की जरूरत है। आर्थिक मामलों में किये प्रयास सफल होगें। मित्रों के साथ दूर की यात्रा करनी पड़ सकती है जिसके फलस्वरूप आपके शरीर में नव उर्जा का संचरण होगा।

मीन : इस सप्ताह अपने समय का पूरा सदउपयोग करने की कोशिश करें। जब व्यक्ति अपने कर्मो के द्वारा सफलता अर्जित नहीं कर पाता है, तो वह अपने भाग्य को दोष देने लगता है। कर्मो के द्वारा कार्यो को तो बदला जा सकता है।

पं० दीनानाथ तिवारी

श्रीमद्भगवत गीता

कार्यकरणकर्तृत्वे हेतुः प्रकृतिरुच्यते।
पुरुषः सुखदुःखानां भोक्तृत्वे हेतुरुच्यते।।

कार्य और करण को उत्पन्न करने में हेतु प्रकृति कही जाती है और जीवात्मा सुख–दुःखों के भोक्तापन में अर्थात् भोगने में हेतु कहा जाता है।।२०।।

पुरुषः प्रकृतिस्थो हि भुङ्क्ते प्रकृतिजान्गुणान्।
कारणं गुणसङोऽस्य सदसद्योनिजन्मसु।।

प्रकृति में स्थित ही पुरुष प्रकृति से उत्पन्न त्रिगुणात्मक पदार्थों को भोगता है और इन गुणों का सङग ही इस जीवात्मा के अच्छी–बुरी योनियों में जन्म लेने का कारण है।।२१।।

उपद्रष्टानुमन्ता च भर्ता भोक्ता महेश्ररः।
परमात्मेति चाप्युक्तो देहेऽस्मिन्पुरुषः परः।।

इस देह में स्थित यह आत्मा वास्तव में परमात्मा ही है। वह साक्षी होने से उपद्रष्टा और यथार्थ सम्मति देने वाला होने से अनुमन्ता, सबका धारण–पोषण करने वाला होने से भर्ता, जीवरूप से भोक्ता, ब्रह्मा आदि का भी स्वामी होने से महेश्रर और शुद्ध सच्चिदानन्दघन होने से परमात्मा–ऐसा कहा गया है।।२२।।

य एवं वेत्ति पुरुषं प्रकृतिं च गुणैः सह।
सर्वथा वर्तमानोऽपि न स भूयोऽभियायते।।

इस प्रकार पुरुष को और गुणों के सहित प्रकृति को जो मनुष्य तत्त्व से जानता है, वह सब प्रकार से कर्त्तव्यकर्म करता हुआ भी फिर नहीं जन्मता।।२३।।

3
साप्ताहिक
हिन्दू सभा
वार्ता
दिनांक 29 नवम्बर से 05 दिसम्बर 2017 तक

अध्यक्षीय

राजधानी ही क्यों, हर तरफ है यही हाल

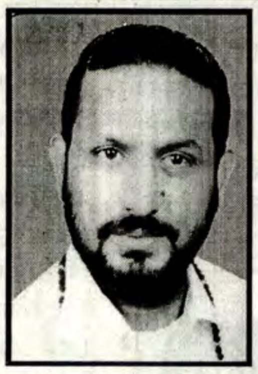

देश की राजधानी दिल्ली हमें आकर्षित करती थी। लेकिन आज हम सभी को इस दिल्ली में रहने की भारी कीमत चुकानी पड़ रही है। दुनिया के २० सबसे प्रदूषित शहरों में शुमार दिल्ली में आज सांस लेना मुश्किल हो रहा है। पिछले दो–तीन दिनों से दिल्ली में प्रदूषण का स्तर इस कदर खतरनाक स्तर पर पहुंच गया है कि लोग डर के मारे घरों से बाहर निकलना नहीं चाहते। दिल्ली–एनसीआर में जानलेवा स्मॉग के चलते लोगों की जिंदगी खतरे में है। स्मॉग की वजह से राजधानी के कई इलाकों में हवा जहरीली हो चुकी है। अरविंद केजरीवाल ने तो यहां तक कह डाला कि दिल्ली गैस चैंबर बन चुकी है। दिल्ली में प्रदूषण से लोगों की जिंदगी को खतरा है ये तो सरकार मान रही है लेकिन इसका इलाज किसी के पास नहीं है। बताया जा रहा है कि पंजाब और हरियाणा में खेतों में जलाई जा रही पराली के चलते दिल्ली का ये हाल हुआ है। दिल्ली के आसमान में इस तरह की धुंध पहली बार देखने को नहीं मिल रही। पिछले कई सालों से दिल्ली का यही हाल है। पहले कुछ लोग दिल्ली में प्रदूषण के लिए दिवाली पर आतिशबाजी को भी जिम्मेदार ठहराते थे, लेकिन इस बार पटाखों की बिक्री पर रोक के बावजूद दिल्ली की हवा जहरीली हो चुकी है। स्मॉग का सबसे ज्यादा प्रभाव दिल्ली के लोगों की स्वास्थ्य पर पड़ रहा है। अस्थमा के मरीजों के लिए ऐसे समय में बाहर निकलना किसी खतरे से कम नहीं। दिल्ली की स्थिति किस कदर खराब हो चुकी है इसका अंदाजा इसी से लगाया जा सकता है कि राजधानी में कई इलाकों में एयर क्वालिटी इंडेक्स ४०० के पार पहुंच गया। केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड की मानें तो इसकी बड़ी वजह पंजाब और हरियाणा से आने वाली हवाएं हैं। अभी कुछ दिन पहले एक अध्ययन से यह बात सामने आई थी कि दिल्ली के प्रदूषण में इंसान की जान ६ साल कम हो रही है। सवाल देश की राजधानी की हवा का है, तो इस पर राष्ट्रीय स्तर पर चिंतन और चिंता हो रही है। अभी सांस लेने में दिक्कत हो रही है, तो वायु प्रदूषण की बात हो रही है। जब गर्मियों में पानी की किल्लत होती है और खराब गुणवत्ता का पानी मिलता है, तो जल प्रदूषण पर बात हो जाती है, और दिवाली के आसपास ध्वनि प्रदूषण पर चर्चा कर ली जाती है या फिर अजान के शोर जैसे बेसिरपैर के बयानों के बहाने बात होती है। हम इतने स्वार्थी हो चुके हैं कि जब तक खुद की जान पर न बन आए, जब तक खुद परेशानियों से न घिरें, हमें प्रदूषण जैसी बातें वक्त की बबार्दी लगती हैं। दिन–रात एसी में रहने वालों को जब धुंध और धुएं का सामना करना पड़ा तो वायु प्रदूषण याद आया। लेकिन समाज में उन लोगों के बारे में कितनी चिंता की जाती है, जो दिन–रात धूल, धुएं और गंदगी के बीच ही रहने को मजबूर हैं। झुग्गी–झोपड़ियों में रहने वाले साक्षात नरक में ही जीवन जीते हैं। गांवों में पीने के साफ पानी की मारामारी आम बात हो चुकी है। वाहनों के धुएं और शोर से इंसानों के साथ–साथ पशु–पक्षियों के प्राण भी संकट में पड़े हैं। लेकिन आमतौर पर समाज में इन सारी बातों पर चिंता का माहौल ही नहीं है। स्वार्थ में पूरी तरह लिप्त इंसान यह मानकर चलता है कि इस धरती का काम उसका बोझ ढोना और उसे जरूरत की सारी चीजें मुहैया कराना है। प्राणवायु आक्सीजन, पानी, भोजन, लकड़ी, ईंधन, रत्न–जवाहरात सब उपलब्ध कराने वाली धरती को जब इंसान नहीं बख्शता है, तो अपने साथी मनुष्यों की चिंता क्या खाक करेगा। अभी भी जब दिल्ली में सेहत का आपातकाल लागू हो गया तो अमीरों के पास एयरप्यूरीफायर और मास्क खरीदने का विकल्प हो गया। इनकी उपयोगिता कितनी है। भारत को यह देखना चाहिए कि चीन, ब्राजील, स्विट्जरलैंड, फ्रांस, जर्मनी ऐसे कई देशों में जब वायु प्रदूषण का संकट आया तो निजी वाहन कम करके, सार्वजनिक परिवहन को बढ़ावा देकर, निर्माण कार्य रोककर, बड़े पैमाने पर सचमुच का स्वच्छता अभियान चलाकर, कारखानों में ईमानदारी से प्रदूषण नियंत्रण के उपाय कर हवा को साफ किया गया। अभी अमरीकी राष्ट्रपति चीन में थे और वहां भी इसी तरह की धुंध थी तो चीन ने गाड़ियों और निर्माण कार्य को प्रतिबंधित किया, साथ ही स्टील, सीमेंट और कोयला कंपनियों के प्रोडक्शन पर अस्थायी रोक लगा दी गई थी। इन उपायों से करीब २५ फीसदी प्रदूषण कम करने का दावा किया गया। लेकिन ब्रिटिश राजकुमार चार्लस दिल्ली आए तो उनका स्वागत धुंध भरे माहौल में ही किया गया।

राष्ट्रीय उद्बोधन
चन्द्र प्रकाश कौशिक
राष्ट्रीय अध्यक्ष

E-mail : chandraprakash.kaushik@akhilbharathindumahasabha.org

सम्पादकीय

कालेधन का एक और काला कारनामा

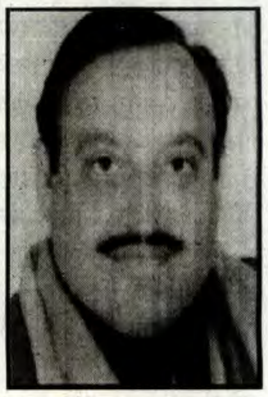

पनामा पेपर्स के बाद अब पैराडाइज पेपर्स ने खुलासा किया है कि टैक्स चोरी करके विदेशों में कालाधन छुपाये गये हैं। इस खुलासे में भी भारत के नेताओं, उद्यमियों और सिनेमा स्टारों आदि बड़े लोगों के नाम शामिल हैं। पनामा पेपर्स की तरह ही पैराडाइज पेपर्स में भी ढेर सारी फर्जी कंपनियों और फर्मों के बारे में खुलासा हुआ है, जो बड़े–बड़े लोगों के पैसों को विदेशी बैंकों में भेजने में मदद करते हैं, इन कंपनियों या फर्मों की शरण में दो तरह के लोग जाते हैं। एक तो वे, जो टैक्स की चोरी करते हैं और उन पैसों को इन फर्जी कंपनियों के जरिये विदेशी कंपनियों में या बैंकों में जमा करवा देते हैं। दूसरे वे लोग होते हैं, जो बनाये गये नाजायज पैसों को सेल कंपनियों के जरिये छुपाकर वापस लाते हैं। इन सेल कंपनियों को चलाने वाले वहीं के स्थानीय लोग होते हैं, मसलन वकील, सीए आदि। इस पूरी प्रक्रिया में कालेधन का एक बड़ा भ्रष्टाचार स्पष्ट है। भ्रष्टाचार दो तरह का होता है, पहला आपराधिक भ्रष्टाचार और दूसरा नागरिक भ्रष्टाचार अफसोस की बात यह है जिन लोगों को टैक्स में छूट मिली होती है, वे भी ऐसे कंपनियों के जरिये अपने पैसों को छुपाते हैं। भारत के लिए तो यह खुलास बहुत मायने रखता है, क्योंकि यहां बहुत से लोग स्विस बैंक में पैसे रखते हैं। इस ऐतबार से चाहे पनामा पेपर्स हो या फिर पैराडाइज पेपर्स, ये दोनों एक ही तरह के खुलासे हैं। भारत का मौजूदा सत्ता पक्ष जिस तरह से भ्रष्टाचार खत्म करने की बात करता है और दोषियों को कड़ी से कड़ी सजा की मांग करता है, उसके मद्देनजर सत्ता पक्ष को चाहिए कि वह इसकी गहराई और ईमानदारी से जांच कराये। ईमानदारी से इसलिए क्योंकि पनामा पेपर्स के खुलासों की जांच के बारे में क्या हुआ, इसका कुछ पता नहीं है। अगर सरकार इस बात की मंशा रखती है कि देश में भ्रष्टाचार पैदा ही न होने पाये, तो सरकार को चाहिए कि ऐसे मामले आने के बाद वह तुरंत ही कार्रवाई और साथ नाजायज पैसों का छुंपे तरीके से आवागमन को रोकने का सिस्टम विकसित कर भ्रष्टाचार को न बढ़ने दे। पनामा पेपर्स मामले में यह कहा गया था कि इसमें जिन लोगों के नाम आये हैं, उसकी पूरी जांच–पड़ताल होगी, लेकिन वह जांच कहां तक पहुंची, किन–किन लोगों पर आरोप साबित हुआ, इसका अभी कुछ अता–पता नहीं है। पैराडाइज पेपर्स की जांच से पहले तो सरकार को इस बात का स्पष्टीकरण देना चाहिए कि इसके पहले वाले खुलासे पनामा पेपर्स में कितने लोग दोषी हैं और कितनों पर आरोप गलत हैं। साथ ही सरकार को यह भी बताना चाहिए कि इस जांच में इतना वक्त क्यों लग रहा है, यह इसलिए जल्दी और निष्पक्ष होना चाहिए, ताकि निर्दोष लोगों की बदनामी नहीं होने पाये। पैराडाइज पेपर्स के खुलासे और कालाधन रखनेवालों को लेकर दो बातें महत्वपूर्ण हैं, एक तो यह कि ऐसे मामलों में जांच के बाद फौरन दूध का दूध और पानी का पानी होना चाहिए कि सच्चाई क्या है। ताकि इससे न सिर्फ निर्दोष लोगों को बदनामी से बचाया जाये, बल्कि टैक्स चोरी से सरकार के राजस्व पर पड़नेवाले असर को भी कम किया जाये। दूसरी बात यह है कि देश के आम लोगों के मन में यह बात बैठी हुई कि बड़े लोग चाहे कुछ भी कर लें, सख्त कानून भी उनका कुछ नहीं बिगाड़ पाता, या जिनके पास पैसा होता है, उन पर कोई कार्रवाई नहीं हो सकती है। अगर फौरन जांच के बाद सच्चाई बाहर आ जाये और दोषियों को सजा मिल जाये तो इससे आम जन के मन में सरकारों और जांच एजेंसियों के प्रति विश्वास बढ़ेगा। कालाधन के दो पहलू हैं, एक पहलू यह है कि जो कालाधन बन गया है, उसको कैसे छिपाकर रखा जाये, इसके लिए कई हथकंडे इस्तेमाल किये जाते हैं, रियल स्टेट में लगाये जाते हैं या फिर शेल कंपनियों के जरिये बाहर भेजे जाते हैं। यह सिर्फ भारत की बात नहीं है, बल्कि दुनिया के हर देश में ऐसा होता है।सरकार को यह मालूम है कि किस तरह से परमिशन राज के चलते उद्योगपतियों और नौकरशाहों की सांठगांठ से कालेधन का निर्माण होता है, इन दोनों तरीकों पर सरकार जब तक रोक नहीं लगायेगी, तब तक कालेधन का पर अंकुश मुश्किल है। सरकार के लिए यह एक अच्छा मौका है कि पैराडाइज पेपर्स की जांच कराकर भ्रष्टाचार के खिलाफ चल रही जंग को जीतने में एक पड़ाव पार करे। कालेधन के खिलाफ सख्त कदम नोटबंदी को एक साल होने से ठीक पहले पैराडाइज पेपर्स का खुलासे का संकेत क्या है, यह आनेवाला वक्त बतायेगा।

राष्ट्रीय आह्वान
मुन्ना कुमार शर्मा
राष्ट्रीय महासचिव

E-mail : munna.sharma@akhilbharathindumahasabha.org

मधुमेह रोगी और हृदय रोग

मधुमेह रोग का हृदय रोगियों पर बहुत ही बुरा प्रभाव पड़ता है। मधुमेह ग्रस्त मरीजों में एन्जाइना और हार्टअटैक होने पर मौत की संभावना ज्यादा रहती है और दुबारा हार्ट अटैक होने की संभावना रहती है। मधुमेह रोग जीवनपर्यन्त का जटिल घातक रोग है। इसके कारण कमोवेश लगभग सभी अंग देर–सवेर क्षतिग्रस्त हो सकते हैं। इसमें हृदय रोग मौत का प्रमुख कारण है। ऐसे रोगियों का वजन सामान्य बनाये रखने के लिए ३–५ किमी. तेज गति से चलना चाहिए। शरीर में वसा की मात्रा २८ प्रतिशत से कम होनी चाहिए। कमर की माप पुरुषों में ४० इंच और महिलाओं में ३७ इंच से ज्यादा नहीं होनी चाहिए। भोजन में कोलेस्ट्रॉल की मात्रा ३०० मि.ग्राम से ज्यादा नहीं होनी चाहिए।

मधुमेह और यौन रोग

रोगियों में यौन सम्बन्धी विकार उत्पन्न होने लगते हैं। शिश्न की त्वचा फटने लगती है एवं दाने भी पड़ने लगते हैं। शिश्न में तनाव कम होने लगता है। मधुमेह रोगियों में यौन प्रक्रिया के शुरू होते ही वीर्य तुरन्त ही स्खलित हो जाता है। इसके अतिरिक्त शिश्न मुख से वीर्य बिल्कुल नहीं निकलता। यह समस्याएँ पुरुषों के लिए बहुत ही गंभीर होती हैं। इसी प्रकार स्त्रियों में मधुमेह के कारण यौन उदासीनता के लक्षण विकसित होते हैं। अनियंत्रित मधुमेह के कारण कई प्रकार के जीवाणुओं और फफूंदियों के हमले भी तेज हो जाते हैं। इस प्रकार योनि में कैन्डिडा फफूंदी का संक्रमण विशेषरूप से होता है।

किडनी और ब्लडप्रेशर

यदि आप डायबिटीक हैं और अधिक दिनों से हैं ऐसी स्थिति में कभी भी आपकी किडनी खराब हो सकती है। यदि आप किडनी के मरीज हैं तो यह संभव नहीं है कि आप ब्लडप्रेशर के मरीज न हों। यदि आप खानपान एवं अपनी जीवनशैली में परिवर्तन नहीं करते तो यहीं पर जीवन लीला समाप्त हो जाती है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि मधुमेह रोग अकेला ही नहीं आता बल्कि तमाम रोगों के साथ आता है। अतः इससे बचकर रहना ही अच्छा है।

मधुमेह रोगियों पर आयुर्वेदिक दृष्टिकोण क्या है? मधुमेह के बारे में विस्तृत जानकारी आप लोगों को होती रहती है परन्तु इस रोग से मुक्ति के क्या उपाय हैं?

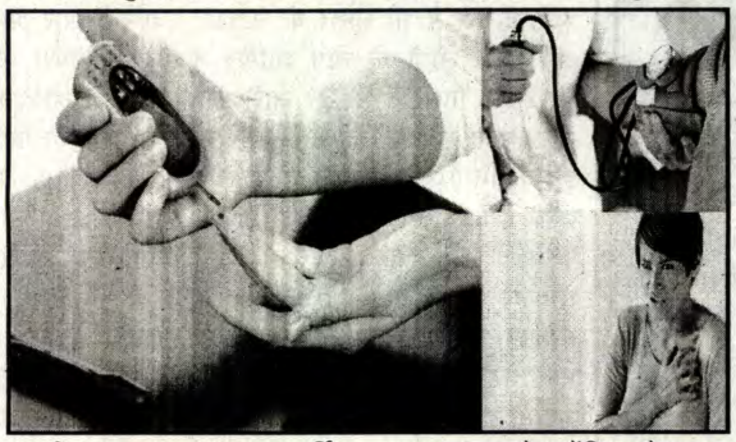

इसकी तरफ आपका ध्यान आकर्षित करना चाहता हूँ। जैसा कि आप सभी लोग यह जानते हैं कि मधुमेह रोग किन कारणों से होता है। यह चीनी या मिठाई खाने मात्र से ही नहीं होता बल्कि पैंक्रियाज का रोग है। पैंक्रियाज से इंसुलिन पैदा होती है। मधुमेह की बीमारी को आहार से नियंत्रित करना चाहिए। जैसा कि आप सभी लोग यह जानते हैं कि हमारे आहार के ७ प्रमुख घटक होते हैं। जैसे–कार्बोहाइड्रेट्स (शर्करा), प्रोटीन, वसा, चर्बी, विटामिन, खनिज लवण, रेशा और पानी।

इनमें से ३ घटक अंगों में देने वाले घटक हैं। चौथे और पाँचवें घटक शरीर की विभिन्न जैस रासायनिक क्रियाओं (Bio-Chemical Reaction) जबकि अंतिम २ घटक रेशा (फाइबर एवं मल) निर्माण और पानी प्रवाही के रूप में काम आते हैं।

दूसरा मधुमेह रोगियों को अपने रोगों को व्यायाम द्वारा नियंत्रण करना चाहिए। प्रतिदिन ऐसे रोगियों को ३–५ किमी॰ तेज स्पीड से चलना चाहिए। इतनी तेज गति होनी चाहिए कि पूरे शरीर में पसीना आने लगे। इससे प्रत्येक अंगों की क्रियाशीलता बढ़ जाती है और इंसुलिन की आवश्यकता की पूर्ति हो जाती है। हृदय रोगियों पर भी बहुत अच्छा प्रभाव पड़ता है क्योंकि प्रयोगात्मक रूप से यह देखा गया है कि सामान्य स्वस्थ वयस्क मनुष्य को प्रतिदिन अपने वजन से २५ से ३० गुना कैलोरी ऊर्जा वाले आहार की आवश्यकता पड़ती है। यही आवश्यकता मधुमेह रोगियों को भी पड़ती है।

एक ६० किग्रा॰ वजन वाले पुरुष की दैनिक आवश्यकता 60×35 = 2100 कैलोरी के लगभग रहती है परन्तु यह मापदंड समय–समय पर कार्य के अनुसार बदलता रहता है। इसलिए आपने यह देखा होगा कि किसान को मधुमेह रोग बिल्कुल ही नहीं के बराबर होता है। यदि आनुवंशिक हो तो कह सकते हैं अन्यथा नहीं होता, इसका कारण यह है कि वह शारीरिक श्रम अधिक करता है। इस प्रकार हम यह देखते हैं कि प्रत्येक व्यक्ति को ३० कैलोरी प्रति किग्रा॰ के हिसाब से भोजन यानि ६० किग्रा॰ वजन के व्यक्ति को १८०० कैलोरी वाला भोजन लेना चाहिए परन्तु यदि व्यक्ति का वजन अधिक है तो २५ कैलोरी प्रति किग्रा॰ के हिसाब से लेना चाहिए। यदि उपरोक्त दोनों विधियों से मधुमेह रोगियों को आराम नहीं मिलता है तो उसे दवा द्वारा नियंत्रित करना चाहिए।

१. बसन्तकुसुमाकर रस + सत गिलोय, प्रवाल पंचामृत रस, योगेन्द्र रस, मुक्तापिष्टी, त्रिफला गुग्गुल की पुड़िया बनाकर दिन में ३ बार दूध के साथ सेवन करें। परन्तु यदि कीटोन की भी समस्या है तो सूतशेखर रस एवं बंगेश्वर रस को भी योग में मिला दें। साथ ही खाना खाने के बाद मधुमेह नाशिनी वटी गोल्ड एवं आसुतोष रस एवं चित्रकादि वटी का भी प्रयोग करें।

२. यदि आपको डायबिटीज फूट की बीमारी भी है तो रसराज रस का भी प्रयोग करें जिससे कि रोगी को रक्तसंचालन की समस्या न हो और चलने–फिरने में कठिनाई न हो।

खाने व न खाने योग्य

भोजन में जौ और चने का आटा गेहूँ के आटे में मिलाकर रोटी बनाकर सेवन करना चाहिए। इसके अतिरिक्त कच्चे चने को भिगोकर भी सेवन करें। दाल, काजू, मूँगफली, चने से बनी चीजें सामान्य मात्रा में ली जा सकती हैं। कम शर्करा वाले फल सेब, पपीता, गाजर, जामुन एक बार में १० ग्राम तक खाये जा सकते हैं। इस प्रकार आहार में कुल १५० से १८० ग्राम तक कार्बोहाइड्रेट्स ६० से ८० ग्राम प्रोटीन, ७० से ८० ग्राम वसा चाहिए ताकि कुल कैलोरी १८०० से ज्यादा न हो। इसके अतिरिक्त मेथी, करेला, सोया का साग, जामुन, लहसुन, एलोवेरा, पत्तागोभी, दालचीनी, ग्रीन–टी, पालक, कोकोआ, फाइबर युक्त सोयाबीन, दलिया, राजमा का सेवन कर सकते हैं। चीनी, तली भुनी चीजें, डेयरी उत्पाद, चाय, कॉफी, तम्बाकू और शराब, अधिक कार्बोहाइड्रेट्स वाले पदार्थ जैसे आलू, चावल, केला और ब्रेडका सेवन न करें। यदि मधुमेह रोगी उपरोक्तानुसार कार्य करता है तो निश्चित ही उसे मधुमेह से मुक्ति मिल सकती है।

नीम के औषधीय गुण

सरदी-जुकाम : नीम की ताजी पत्तियों को उबाल लें या पानी में नीम के तेल की एक–दो बूँदें डालकर उबाल लें। इस पानी की भाप साँस के द्वारा अंदर लें। सरदी–जुकाम से बहुत राहत मिलेगी।

डायबिटीज : नीम की लगभग एक मुट्ठी कोमल पत्तियों को पीस लें और उन्हें छलनी से छान लें। इसे जूस में मिलाकर दिन में दो बार सेवन करें।

मुँहासे नाशक ❖ नीम के तेल से पूरे शरीर की मालिश करें त्वचा रोग नहीं होते।

❖ इसके अलावा स्नान करते समय नीम की ताजी पत्तियों को कुचलकर पानी में डाल दें और इस पानी से स्नान करें व इसकी पत्तियाँ चबाएँ मुँहासे नहीं होते, चेहरे पर भी इसके पेस्ट का लेप करें लाभ होगा।

यक्ष प्रश्नों पर प्रतिक्रिया

१. 1941 के जनसंख्या के आंकड़ों के अनुसार मुस्लिम 9 करोड़ थे। 11 करोड़ नहीं थे।

२. 9 करोड़ में से 3 करोड़ पश्चिमी पाकिस्तान में गए। 9 करोड़ पूर्वी पाकिस्तान (बांग्लादेश) में गए। शेष 3 करोड़ को नेहरू–गांधी ने भारत में ही रहने के लिए सहमत कर दिया।

३. 1235 के कार्यकाल में लगभग पौने नौ करोड़ हिन्दू ने मुस्लिम धर्म अपनाया। शेष अरब से आए थे।

४. 68 वर्षों में $14\frac{1}{2}$ करोड़ मुस्लिम बढ़े जिसके लिए उदारवादी, असंगठित, अहिंसक, डरपोक, स्वार्थी, लालची, कुर्सीवादी, गांधीवादी नेता स्पष्ट रूप से दोषी हैं क्योंकि उन्होंने अखिल भारतीय स्तर पर मुस्लिमों को अल्पसंख्यक मानकर संविधान में अनुच्छेद 21 तथा 30 लगाकर उन्हें विशेषाधिकार देकर भयंकर गलती की।

❖ जम्मू कश्मीर की सत्ता शेख अब्दुल्ला को सौंपकर अत्यन्त निन्दनीय कार्य किया। उसने नेहरू की उदारता का लाभ उठाकर, अनुच्छेद 370 लगवा कर, सुल्तान की भाँति कार्य करने लगा और नए नए कानून बनाकर रियासत को राज्य न बनाकर उपराष्ट्र के समान बनाकर, विलय को विवादास्पद बना दिया।

❖ नए संविधान में, समान नागरिक संहिता नहीं बनाने की मुस्लिमों की अनुचित मांग, स्वीकार कर ली गई।

❖ विदेश मंत्री अटल बिहारी बाजपेयी ने 1978 में अल्पसंख्यक आयोग बनवाकर मुस्लिमों को खुश किया।

❖ 1980 में नव गठित पार्टी भाजपा में बाजपेयी ने 1/3 हरा रंग ध्वज में शामिल करके तथा अल्पसंख्यक मोर्चा बनाकर मुस्लिमों के आगे घुटने टेक दिए।

❖ 2002 में प्रधानमंत्री बाजपेयी ने कहा कि मानवाधिकार आयोग बन जाने पर भी अल्पसंख्यक आयोग जारी रहेगा। इससे मुस्लिमों को दोहरा लाभ मिलने लगा।

❖ मुस्लिमों परिवार नियोजन/ नसबन्दी को अस्वीकार कर दिया। 4-4 शादियां करे, लव जिहाद का सहारा लेकर, झूठे नाम बताकर, अन्य तरीके अपनाकर हिन्दू लड़कियों को मुस्लिमो बनाने लगे। बड़े बड़े परिवारों को उचित बताने लगे। भाजपा नेताओ ने भी गांधीवादी उत्तर देकर मुस्लिमों का मनोबल बढ़ा दिया कि परिवार नियोजन स्वैच्छिक कार्यक्रम है यदि मुस्लिम नहीं अपनाते हैं तो उनकी इच्छा है। जबरदस्ती नहीं की जाएगी।

❖ बुलन्दशहर में तीन प्रतिशत मुस्लिम नसबन्दी करा रहे हैं जबकि उनकी आबादी इक्कीस प्रतिशत है।

❖ देश में मुस्लिम 10 प्रतिशत से बढ़कर 15 प्रतिशत हो चुके हैं लेकिन किसी को भी चिन्ता नहीं है। ऐसी विचित्र स्थिति में अनिवार्य परिवार नियोजन की मांग जोर शोर से करनी चाहिए अन्यथा हिन्दू पुनः गुलाम हो सकता है।

सावरकरवाद प्रचार सभा, बुलन्दशहर

'क्या मानव जीवन की कमान सृष्टि के हाथों में?'

✍ रश्मि अग्रवाल

इस प्रश्न पर चिन्तन–मनन करते हुए समझें कि पर्यावरण का संरक्षण व परिवर्द्धन का संदेश भारतीय जीवन–दर्शन के आधार चिंतन में निहित है। यहाँ अनादि काल से दिन का प्रारम्भ सूर्य को अर्ध्य व तुलसी के जल देकर करने की परम्परा रही है। पूजन–पद्धति में पीपल, वट, नीम, आवलाँ और केला आदि पेड़–पौधों की महत्ता का प्राचीन काल से स्थापित होना भी न तो आनक है, न निरूद्देश्य। दिन–रात ऑक्सीजन उत्सर्जित करने वाले वृक्ष, पूजनीय गंगा माता के रूप में धरती, पिता के रूप में आकाश, सभी में देवत्व के दर्शन करने का हमारा दर्शन इसी पहलू की ओर इंगित करता है कि जिनसे हमारा जीवन संभव है, उस प्रकृति में ही देवत्व है, इन्हें यथोचित सम्मान दें, संरक्षण दें।

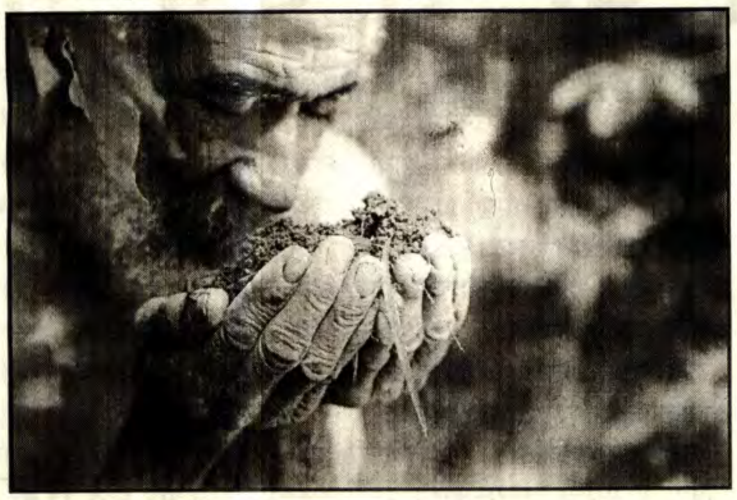

विश्व के किसी अन्य दर्शन मत में समग्र प्रकृति या अखंड पर्यावरण के प्रति ऐसा समवेत, प्रगाढ़ और चिंतन या जन–भागीदारी सुनिश्चित करने वाला प्रयास नहीं मिलता। बाजारवादी दौर में आज यह अनुभूत करना भी रोमांच से भर देता है कि हमारे पूर्वजों ने शताब्दियों पूर्व से ही कैसे प्रकृति व पर्यावरण से जुड़े चुनौती खतरों को भांप लिया था और कितने सटीक रूप में इनकी संरक्षण के कार्य में प्रत्येक व्यक्ति की भागीदरी सुनिश्चित करने वाली जीवन–प्रणाली का विकास कर डाला।

अब प्रश्न उठता है कि पर्यावरण के संरक्षण में रत इस संस्कृति का संवाहक होते हुए भी हम पर्यावरण के प्रति कितने सचेत हैं? क्या हम अपने आध्यात्मिक नीति–निर्माताओं की उद्धत भावनाओं को सिर्फ पूजा या कर्मकाण्ड तक सीमित समझते हैं क्योंकि हम नदियों को दूषित कर रहे हैं...क्योंकि पानी के पास ठौर–ठिकाना बनाने वाली इंसानी सभ्यता आज अपने पूर्वजों की इस संस्कृति को तितांजलि दे चुकी है। इसका कारण पानी उनके लिए अनमोल नहीं रहा, वैज्ञानिक अविष्कारों और यांत्रिकी के बल पर आज वे जहाँ इच्छा हो पानी पैदा कर लेते हैं। ये सुविधाएँ हमारे पूर्वजों के पास नहीं थीं, इसलिए वो प्रकृति के अनुरूप कार्य करते थे। अब बात आती है वे पिछड़े थे या हम? वे प्रकृति के पुजारी थे या हम? उत्तर स्पष्ट है कि पानी की बढ़ती परेशानी ने समझा दिया है कि हमारा तरीका यानि दैनिक उपयोग का ढंग प्रकृति के विरुद्ध है, क्योंकि एकतरफा जनसंख्या विस्फोट, दूसरी ओर जलस्रोतों व गुणवत्ता में कमी, संरक्षण के तरीकों में अशुद्धियाँ सभी ने समझा दिया है कि हमारे पूर्वज भले ही अन्य सुख–सुविधाओं से सम्पन्न न रहे हों पर पानी के मामले में कहीं ज्यादा समद्ध थे, मात्रा व गुणवत्ता दोनों में व बेपानी कभी नहीं हुए। न धरती से न आंखों से। आज जल कैसे प्राकृतिक धरोहर तीसरी सबसे बड़ी समस्या बताया गया है। यदि आने वाले दस वर्षों में संभावित प्रभावों के आधार पर विचार किया जाए तो ४० प्रतिशत विशेषज्ञों ने जल संकट और ३७ ने जलवायु परिवर्तन को चयनित किया है।

बात करें जल प्रदूषण की तो अर्थ है व जल जिसमें प्रदूषक तत्वों की मात्रा अनुज्ञेय सीमा से अधिक हो, और इसके कारणों पर नजर दौड़ाएं तो

१. जनसंख्या वृद्धि से मलमूत्र व कचरा निपटान की गंभीर समस्या

२. नदियां व जल के उच्च स्रोतों में औद्योगिक कचरे व प्लास्टिक का जमा होना

३. परमाणु परिक्षण से जल में नाभिकीय कण मिलने से जल का दूषित होना

४. गांवों में, तालाबों, नहरों में नहाने, कपड़े धोने, पशुओं को नहलाने आदि से जल स्रोतों का दूषित होना

५. धार्मिक अनुष्ठान, क्रियाक्रम रासायनिक उर्वरक एवं कीटनाशकों का प्रयोग ईधनों का जल में मिलना, खनन कार्य, से जल का प्रदूषित होना आदि हैं

जल प्रदूषण के प्रभाव?

❖ जल में सीसा (लैड) से प्रत्येक वर्ष एक लाख पक्षियों की मृत्यु का होना

❖ ६० प्रतिशत पक्षियों का किसी न किसी रूप में प्लास्टिक खाना

❖ दुषित जल से प्रत्येक वर्ष छोटे बच्चों में घातक बीमारियों का होना

❖ नदियों में यमुन कटक में महानदी, डिब्रूगढ़ (असम) में ब्रहमपुत्र, जबलपुर मध्य प्रदेश में नर्मदा, सूरत (गुजरात) में ताप्ती, वाराणसी में गंगा व विजयवाड़ा में कृष्णा नदी का जल जिसकी गुणवत्ता पर ४६ फीसदी लोग विश्वास नहीं करते यानि पीने योग्य नहीं इतना ही नहीं अन्य शहरों पर भी नजर दौड़ाएं जैसे

❖ महाराष्ट्र में मराठ वाड़ा और विदर्भ का इलाका भयंकर सूखे की चपेट में है

❖ लातूर में अकाल जैसी स्थिति है वहां टैंकर माफिया का राज है।

❖ औरंगाबाद में १२००० लीटर पानी वाला टैंकर मिनटों में रिक्त हो जाता है। वहां गर्भवती महिलाएं दूर से पानी लाकर जीवन यापन करती हैं

❖ बुंदेलखंड के लिए करोड़ों का पैकेज केन्द्र सरकार ने दिया फिर भी पानी का संकट है। ऐसे ही गया कि मानपुर में लोग पानी की किल्लत के कारण विवाह तक टाल देते हैं।

❖ वहीं उत्तर प्रदेश के बागपत, मथुरा, गाजियाबाद, हाथरस, मेरठ, सहारनपुर, जालैन, हमीरपुर, जौनपुर, वाराणसी एवं इलाहाबाद में भूजल स्तर में भारी गिरावट पाई गई है।

जरा सोचिए, वो कल कैसा होगा जब जल नहीं होगा, और आज के परिवर्तन को देखते हुए धरती क्या आकाश भी थरथराता नजर आयेगा और इसका कारण होंगे हम और आप क्योंकि हम ही इसके ग्राहक हैं

पर्यावरणीय समृद्धि की चाहत, या उपभोगवादी चीन और अमेरिका जैसा बनने की चाहत, क्यों? ये प्रश्न भारत स्वयं से करें? कि विकास की इस अंधी दौड़ में क्या खोना व क्या पाना चाहते हैं? पहले ये सुनिश्चित करें। क्योंकि विकास की चाहत में प्राकृतिक संसाधनों की उपलब्धता जितनी घटती जाएगी, विकास के पैमाने प्राप्त करने की चीख–पुकार उतनी ही बढ़ती जाएगी। अतः चाहे नमामी गंगे का संकल्प हो, स्वच्छ भारत, डिजीटल इंडिया, वनों की रक्षा या प्राकृतिक संरचना का वास्तविक रूप–स्वरूप, सभी का परम्परागत ढाँचा चरमर जाएगा। इसके लिए प्रश्न भी स्वयं से ही करना होगा कि प्रगति के सोपानों पर चढ़ प्रकृति से खिलवाड़ क्यों? जिन हाथों में देखभाल की जिम्मेदारी सौंपी है वही आज अर्थहीन से क्यों? लेकिन यहाँ विषय की वास्तविकता को अनुभव करते हुए विचारणीय और ज्वलंत पहलू भी हैं कि तकनीक के सहारे कोई भी देश पर्यावरण और विकास के पथ का चयन करना होगा जैसे ऑस्ट्रेलिया के पास धातु, सऊदी अरब के पास तेल, अमेरिका के पास भूमि है तो आवश्यक तो नहीं ये हमारे पास भी हों, तब क्या हम उनका अनुसरण करते हुए जंगलों, नदियों और खेतों को नष्ट कर दें?

हाँ। हमारे पास अपार मानव संसाधन है। हम संगीत कला सिनेमा, शेष पृष्ठ 11 पर

राम तुम्हारा अभिनन्दन है

रावण तुमने संहारा था, पर रावण अब भी जिन्दा है।
वह भी रावण है जो, सत्पुरुषों की नित करता निन्दा है।
जो सबको गाली देता है, वह रावण से भी गन्दा है।
उसको मारो जिसके कारण, अन्तर्मन करत कंदन है।
राम तुम्हारा अभिनन्दन है।
देखो उस अबला नारी की, चेन खीचकर भागा कोई।
उसे ले गए अपहरण करके, जो माँ पास किशोरी सोई।
वह रावण है जिसके हाथों, अबला मन–प्रतिष्ठा खोई–
ऐसे सब रावण संहारो, हर मानव करता वन्दन है।
राम तुम्हारा अभिनन्दन है।
आतंकी, नक्सैली या उग्री, यह सब रावण के वंशज हैं।
पूर्व जन्म लेकर उतरे यह, सारे कुम्भकरण अंशज हैं।
इनको मारो राम छुपे जिनके मन में निश्चर अंडज हैं–
हमें बचा लो राम तुम्हें, अर्पित तन–मन –रोली चन्दन है।
राम तुम्हारा अभिनन्दन है।
इनमें कुछ शराब पी–पीकर, रामायण मंचन करते हैं।
चन्दा दान–दक्षिणा लेकर, निज धन का संचन करते हैं।
ऐसे भी हत्यारे हैं जो, राम नाम गुंजन करते हैं–
इनको पहचानो पुरुषोत्तम, यह जीवन तुमको अर्पण है।
राम तुम्हारा अभिनन्दन है।
नित्य सहस्रों अबलाओं का, प्रभुवर शीलहरण होता है।
कहीं–कहीं तेजाब काण्ड से, जीवन एक मरण होता है।
हर दुष्कर्मी धन के बल पर, नेता चरण–शरण होता है–
नित्य–नित्य हो रहा राम जी, राक्षस कुल में समवर्धन है।
राम तुम्हारा अभिनन्दन है।

हितेश कुमार शर्मा

भाई जी आज के सन्दर्भ में

आज देश की राजनीतिक स्थिति पर दृष्टि जाती है, तो भाई जी की याद आती है। उन्होंने यह चित्र बरसों पहले ही देख लिया था। आज देश में जो साम्प्रदायिकता उभर रही है, यह उन्हीं घटनाओं के विकासक्रम की चरम सीमा है, जिनकी ओर भाई जी राष्ट्र का ध्यान बार–बार आकृष्ट करवाते रहे। उन्हें इस संसार से गये ३८ वर्ष से भी ऊपर का समय हो गया और बात वही की वही है। महात्मा गाँधी ने अपना पूर्ण जीवन हिन्दू–मुसलमान मैत्री पर लगा दिया। इस ऐक्य को आधार मानकर ही पाकिस्तान बनने दिया गया। अन्त में इसी मैत्री की बलिवेदी पर महात्मा जी की आहुति चढ़ी, परन्तु यह मित्रता नहीं हुई। साम्प्रदायिक स्थिति का नजारा आज भी वही है जो १९३० में था। कांग्रेस ने इन्हीं दिनों नेहरू रिपोर्ट और जिन्ना की १४ माँगों को स्वीकार कर लिया था। १९३२ में साम्प्रदायिक निर्णय की घोषणा की गई थी, जिसके आधार पर ही आगे चलकर पाकिस्तान की नींव रखी गई। १९४२ में क्रिप्स मिशन आया। उसी के प्रस्तावों के सन्दर्भ में राजा जी का फार्मूला प्रस्तुत किया गया। १९४५ में हिन्दू और मुसलमानों के प्रतिनिधित्व का समान अधिकार स्वीकार कर लिया गया। १९४६ में कैबीनेट मिशन आया और १९४७ में भारत विभाजन हो गया। यदि हिन्दुओं ने भाई जी की आवाज सुनी होती और उनके प्रति अपमानजनक उपेक्षावृत्ति न अपनाई होती, तो भारत का इतिहास कुछ और होता। बताया जाता है कि अपने जीवन के अन्तिम दिनों में गाँधी जी बहुत ही दुखी व्यक्ति थे। यद्यपि देश स्वाधीन हो गया था, परन्तु इससे उन्हें हार्दिक उल्लास नहीं हुआ। विभाजन के समय भीषण रक्तपात हुआ और अमानुषिक अत्याचार हुए। हिन्दुओं और मुसलमानों का परस्पर द्वेष आगे से भी अधिक हो गया। परन्तु यह फिर भी किसी ने महसूस नहीं किया, कि जो नीति वह जीवनभर अपनाते रहे, इसका परिणाम इसके अतिरिक्त और कुछ भी नहीं हो सकता था। यह भी उनके निकट सूत्रों ने एक बार बताया था कि गाँधी जी को यह भी महसूस हो गया था कि भारत कांग्रेस के प्रयत्नों से स्वतन्त्र नहीं हुआ। कांग्रेस के सब प्रयत्न १९४२ में विफल हो चुके थे और 'अंग्रेजो भारत छोड़ो' का आन्दोलन कुछ ही दिनों में कुचल दिया गया था। जब अंग्रेज इस देशव्यापी आन्दोलन को इस सरलता से दबा सके, तो इसके बाद के आन्दोलनों को भी कुचलकर रख सकते थे। १९४६ में विश्व युद्ध में जर्मनी और जापान के पराजित होने के समय भारतीय स्वाधीनता के लिए किए जाने वाले सब प्रयत्न विफल हो गए थे। इसके बाद अंग्रेजों की शक्ति भी जर्जर होने लग गई थी। अमेरीका और रूस विश्व की दो महान शक्तियों के रूप में उभर आये थे। इन दोनों शक्तियों ने ब्रिटेन पर यह दबाव डाला था कि वह अपने साम्राज्य की दुकान को समेट दे। ब्रिटेन आर्थिक दृष्टि से भी दिवालिया हो चुका था और अमेरीका का कर्जदार बन गया था। इन दोनों शक्तियों के दबाव में आकर ही ब्रिटेन की एक–एक करके अपने सभी उपनिवेशों को स्वतन्त्र करना पड़ा था। कांग्रेस ने ऐसे ही शोर मचाकर यह श्रेय लेने का प्रयास किया कि उनके अहिंसक सत्याग्रह के फलस्वरूप देश आजाद हुआ है। ब्रिटेन ने जाते–जाते भारत को विभाजित कर दिया और जिन लोगों के हाथ में उनके जाने के बाद सत्ता आई उसने भी राष्ट्रीय एकात्मकता की ओर उचित ध्यान नहीं दिया। राष्ट्रीय एकता और भावात्मक एकता का शोर मचाते हुए अलगाव की शक्तियों को ही प्रोत्साहित किया। जातिवाद, क्षेत्रवाद, साम्प्रदायिकतावाद और भाषावाद देश की एकता के लिए भयानक खतरा बनकर उभर आया। सारे देश के लिए समान कानून भी न बनाया जा सका। कश्मीर में मुस्लिम साम्प्रदायिकता, पंजाब में सिख साम्प्रदायिकता और उत्तर–पूर्वी राज्यों में ईसाई साम्प्रदायिकता ने भयंकर रूप धारण कर लिया है। जन्म जाति और सम्प्रदाय के आधार पर आरक्षण की नीतियों ने संयुक्त राष्ट्रीयता को स्वप्न बनाकर रख दिया है। अब विदेशों से आने वाले धन की सहायता से ईसाई और मुसलमान हिन्दुओं का धर्म परिवर्तन कर उनकी बहुसंख्या को कम करने के अभियान में जुटे हैं। ये प्रश्न उभरते हैं कि क्या यह किसी नीति की उपेक्षा का फल तो नहीं है? क्या हमारे समक्ष अब भी बचाव का कोई रास्ता है? धर्मनिरपेक्षता की भ्रान्ति के अर्न्तगत अल्पसंख्यकों को प्रसन्न रखने और पृथक रखने को सरकार की नीति से जो भ्रमजाल निर्माण हुआ है, उससे मुक्त होना प्रायः असम्भव हो रहा है। भाई जी कहा करते थे कि 'हिन्दू' को अपने मित्र और शत्रु की पहचान नहीं। वास्तव में हिन्दुस्तान में आकर स्थिति यह रही कि जब यहाँ पर मुसलमान अपना राज्य जमाने में सफल हो गये तो उन्होंने अपने राष्ट्र का विस्तार करना आरम्भ कर दिया। इसके लिए वह सभी प्रकार का उचित और अनुचित ढंग अपनाने लगे। तत्कालीन हिन्दुओं में से राष्ट्रीय भावना तो निकल गई थी। उन्हें पता ही नहीं था कि राष्ट्र क्या बला होता है उनके दिमागों में केवल यही बात रह गई थी कि वे राजपूत, कायस्थ, ब्राह्मण, मराठे और पंजाबी हैं मुसलमानों को भी उन्होंने एक जाति ही समझा। महात्मा गाँधी अथवा ब्रह्मसमाज के प्रवर्तक राजा राममोहन राय तथा इन दोनों महापुरुषों के अनुयायी भी हिन्दू–मुसलमान और ईसाई को जातिमात्र समझते थे। मुसलमान भी आरम्भ में हिन्दू–मुसलमान को अलग–अलग जाति ही समझते थे। अतः ये प्रयास समय–समय पर हुए कि इन्हें एक किया जाए। कई मुसलमानों ने भी जब हिन्दू–मुसलमान को निकट लाने का प्रयास किया तो यही समझा कि यह झगड़ा पन्थगत है। अतः दादू, कबीर, गुरू नानक इस पन्थ की विभिन्नता को मिटाने का यत्न करते रहे। वे भी ऐसे ही असफल हुए जैसे आज के काल में महात्मा गांधी हुए और श्रीमती गाँधी निरन्तर असफल होती चली जा रही है। मुसलमान अपना विस्तार कर रहे हैं। विभाजन के बाद देश में उनकी जो संख्या थी उससे वे दुगने हो गये है। इस स्थिति में भाई जी के कथनों की सार्थकता उभर कर सामने आती है। मगर आज सबसे अधिक खेद की बात यह है कि भाई जी के उत्तराधिकारी और प्रशंसक तमाम इतिहास की उपेक्षा करे, वही बातें कह रहे हैं, जिनका विरोध करने में भाई जी ने अपना समस्त

शेष पृष्ठ 11 पर

भाई परमानन्द की 143 वीं जयन्ती (4 नवम्बर 2017)

भाई परमानन्द उस महान क्रान्तिवीर भाई मतिदास के पवित्र वंश में उत्पन्न हुए थे जिन्होंने १७ वीं शताब्दी में मुगलों के भंयकर कष्ट सहे किन्तु हिन्दू धर्म नहीं छोड़ा। यदि भाई जी को हिन्दुत्व की प्रतिमूर्ति कहा जाए तो अतिशयोक्ति नहीं होगी। १९०६ में भाई जी अफ्रीका के कई देशों में जाकर हिन्दू धर्म की श्रेष्ठता का डटकर प्रचार किया। १९१५ में आपने मालवीय जी तथा स्वामी श्रद्धानन्द के साथ हरिद्वार में हिन्दू महासभा का अधिवेशन कराया जिसमें संगठन को अखिल भारतीय का दर्जा मिला। आपके प्रयास से वीर सावरकर १९३४–३८ के अहमदाबाद अधिवेशन में आए और संगठन के राष्ट्रीय अध्यक्ष बनाए गए। आप अण्डमान की काल कोठरियों में कई साल तक रहे। आप कांग्रेस में भी कुछ दिन रहे किन्तु उसकी मुस्लिम तुष्टीकरण नीतियों से अप्रसन्न होकर उससे अलग हो गए। सन् १९३५ में भाई जी हिन्दू महासभा की ओर से केन्द्रीय असेम्बली के सदस्य बने। आपने वर्षो तक साप्ताहिक हिन्दू अखबार को सम्पादन किया। भाई जी ने देश को दौरा करके हिन्दुओं को समझाया कि वे हिन्दू महासभा का साथ दें। उन पर टमाटरों की वर्षा की गई और अण्डे फेंके गए फिर भी वे प्रयास करते रहे किन्तु मूर्ख हिन्दुओं ने उनकी बात नहीं मानी। वे हिन्दुओं की दुर्दशा को देखकर एकान्त में रोते रहते थे।

अब भाई जी, आपको देश तथा आपकी पार्टी की दशा बताते हैं जो कि इस प्रकार है-

१. नए संविधान में देश विभाजन के दोषी समुदायों को अल्पसंख्यक शब्द की आड़ में कई प्रकार के विशेषाधिकार दे दिए गए हैं। उनके वोट बैंक को संगठित किया गया है। वे शेर की भांति आक्रामक प्रवृत्ति के हो गए हैं। वे लगभग सभी दलों की नीतियों को मुस्लिम समर्थक बनाने में सफल हो गए हैं।

२. वे पुलिस से भी नही डरते हैं। पुलिस को भी उनसे अपना बचाव करना पड़ता है। ६० प्रतिशत दंगों में वे पहल करते हैं। सभी दलों की सरकारें उनके इशारों पर नाचती हैं।

३. उनके बड़े बड़े परिवार हैं। वे परिवार नियोजन के समर्थक नहीं हैं। उनका प्रतिशत ६५ वर्षो में १२ से बढ़कर १८ हो गया हैं।

४. गांधीवादी दल सिख–जैन–बौद्ध को भी अल्पसंख्यक मानती हैं जबकि इनका जन्म भारत में हुआ है और इन पर हिन्दू कोड़ बिल लागू होता है।

५. देश की दशा १९४७ जैसी हो गई है। देश के नेताओं ने विभाजन से कुछ नहीं सीखा हैं वे फिर गलती कर रहे हैं। वे स्वार्थी हैं और अपनी कुर्सी बचाने के लिए बढ़चढ़कर मुस्लिम–ईसाईयों का तुष्टीकरण कर रहे हैं।

६. मुस्लिम–ईसाई विदेशी धर्म हैं। दोनों मांसाहारी हैं। पुनर्जन्म को नहीं मानते हैं। शवों को दफनाते हैं। दोनों ने गठबन्धन कर लिया है और सत्ता पर कब्जा करने के लिए पूरा जोर लगा रहे हैं।

७. देश में अहिन्दूकरण का वातावरण बनता जा रहा है।

इन्द्र देव गुलाटी, बुलन्दशहर

अदालती और न्याय सुधार शीघ्र हो

✍ रिखब चन्द जैन

न्यायपालिका लोकतंत्र की तीसरा बड़ा स्तम्भ है। विधायिका, कार्यपालिका और न्यायपालिका तीनों लोकतंत्र में बिना एक–दूसरे के हस्तक्षेप के स्वतंत्रता के साथ काम करें। यही लोकतंत्र की मूल भावना है। भारत के संविधान में लोकतंत्र के इन तीनों अंगों को पूरी आजादी के साथ काम करने दिया जाये।

न्यायपालिका स्वतंत्र हो। निष्पक्ष हो और सत्य आधारित फैसले करने वाला हो। न्याय निःशुल्क प्रत्येक नागरिक को मिले। न्याय यदि महंगा हो जाता है तो गरीब व्यक्ति और छोटे मामलों में न्याय तक नहीं लगाई जा सकती है। न्याय शीघ्र हो यह एक बहुत बड़ी आवश्यकता है। Justice Delayed is no Justice यह एक सर्वमान्य सिद्धान्त है। भारत में न्याय की प्रक्रिया इतनी जटिल, उलझी हुई पुराने पंथी कानूनों पर आधारित है। सालों–साल, २० साल, २५ साल फैसले आने में लग जाते हैं। तब तक परिस्थितियाँ बदल जाती हैं। प्रतिवादी तब तक जिन्दा भी रहता है या नहीं, उसकी आर्थिक हालत बदल जाती है या नहीं, वो कहीं भाग जाता है या नहीं इस तरह से न्याय के लिए इंतजार करना अन्याय मात्र ही है।

किसी भी अदालती फैसले के दो पक्ष एक वो शीघ्र हो और सस्ता हो, महंगा ना हो तथ दूसरा पक्ष यह कि जब फैसला आये वो सत्य के आधार पर हो। सत्य की शोध करते हुए दोषी करार दिया जाये और उसे सजा दी जाये। न्याय की प्रक्रिया में किसी भी निर्दोष व्यक्ति को किसी भी तरह से सजा नहीं मिले। यही एक मूल सिद्धान्त है। अदालतों में फैसले होने में देरी होने का एक कारण यह बताया जाता है कि जज की कमी है। प्रति एक लाख आबादी को इस देश में जज कम है। इतने बड़े शिक्षित देश में प्राचीन काल में ज्ञान प्रसारित करने वाले देश में न्यायविदों की कमी या न्यायविदों की नियुक्ति करने की देरी। कार्यपालिका क्यों इस मुद्दे को ढिलाई में डालती है यह एक चिन्ता का विषय है। न्यायपालिका ने समय–समय पर इसके लिए कई बार संज्ञान लिया और कार्यपालिका को बताया। फिर भी निर्णय लेने की प्रक्रिया, नियुक्ति की प्रक्रिया में सहमति नहीं हो पा रही है। हाईकोर्ट के जज, सुप्रीम कोर्ट के जज उनकी नियुक्ति कार्यपालिका करे या न्यायपालिका करे या चुनाव से हो जैसे अमेरिका में होता है या कार्यपालिका, न्यायपालिका और सामाजिक कार्यकर्ताओं की मिली–जुली समिति द्वारा हो। परिस्थितियों को देखते हुए यह आवश्यक है कि जजों की नियुक्ति के बारे में न्यायपालिका की सबसे अधिक बलिष्ठ भूमिका रहनी चाहिए। कार्यपालिका और सजग नागरिकों की तो सलाह मात्र हो सकती है। यहाँ न्यायपालिका के उदस्थ्य न्यायमूर्तियों को नियुक्तियों का अधिकार मिले तो उसमें यह जरूरी है कि वो अपने भाई–भतीजावाद, जान–पहचान के लोग, अपने पक्ष के वकीलों को बिना किसी के साथ पक्षपात किये ही नियुक्तियाँ होनी चाहिए। जज की नियुक्ति में सिर्फ उसकी न्यायिक शिक्षा तथा न्यायिक अनुभव ही नहीं काम आयेगा उनके चरित्र के बारे में, उनकी सोच के बारे में वो Committed Judiciary शुरू ना कर दे, पक्षपातपूर्ण फैसले ना करने लगे और वो निष्पक्ष सत्याग्रही हो, चरित्र के उज्जवल हो तभी उन्हें नियुक्ति दी जानी चाहिए। अधिकतर मामले, गलत फैसले जजिज, गलत तरह के व्यक्तियों को नियुक्त कर देने से होता है। पक्षपात करेंगे झगड़ा बढ़ेगा। गलत फैसले देंगे तो पिछली अदालतों तक मामला चलता रहेगा। अगर भ्रष्टाचार से ग्रसित होने वाले लोग होंगे तब भी फैसले गलत होंगे और न्यायिक प्रक्रिया भंग होगी। इन्हीं सब पहलुओं को देखते हुए न्यायिक प्रक्रिया चलनी चाहिए।

एक बात यह भी है कि न्यायिक प्रक्रिया काफी जटिल है। समय बर्बाद करने वाली है। प्रत्येक तरह के मामले को सुलझाने के लिए सिंगापुर जैसे देश की तर्ज पर एक निश्चित समय–सीमा छः महीने की अवधि, एक साल की अवधि, दो साल की अवधि अधिक से अधिक तय होनी चाहिए। वकील केस को लटकाये रखने की और अधिक–अधिक समय अपने मोवक्कील को बचाये रखने के लिए न्यायालय का समय बर्बाद न कर सके ऐसी न्यायिक व्यवस्था होनी चाहिए। प्रोसिजर्स जो न्यायालयों में अभी जो लागू है वो समय बर्बाद करने वाले है। उलझनें बढ़ाने वाले हैं और प्रतिपक्ष को अवसर देते हैं केस को लम्बा करने का या अटकाने का। वो कई दृष्टिकोण से किया जा सकता है जैसे कि लम्बे केस को दबाकर रख दिया उससे प्रतिपक्ष अपना काम और समय बर्बाद करता रहेगा। लम्बा समय इतना हो सकता है कि प्रतिपक्ष ही कई मामलों में मृत्यु तक पहुँच जाये और तब तक फैसले लटके रहते हैं। फिर यह भी वकील सोचते हैं कि कभी कोई फेवरेबल जज साहब आयेंगे तब फैसला करवायेंगे। फेवरेबल का मतलब भ्रष्टाचार से भी हो सकता है और उनकी प्रवृत्ति से भी हो सकता है। यह भी प्रोसिजर्स के अन्दर अधिकतर ऐसा है कि बिना मतलब के समय बर्बाद किया जाता है। अनावश्यक गवाहें पेश की जाती हैं। अनरिलेटिड का कोई दूर–दूर तक समझ नहीं है ऐसे प्रश्न उठाये जाते हैं और बहस चलती रहती है तो कोर्ट के प्रोसिजर/कार्यवाही का तरीका सरल, सुगम और बिना उलझे हुए होने चाहिए। इस पर समीक्षा की अति आवश्यकता है और यह इस प्रोसिसिंग को बहुत ही छोटा एवं कम समय में कैसे पूरा करें यह तुरन्त सुधार की आवश्यकता है। जजों की नियुक्ति के साथ–साथ प्रोसिजर चेंज होना चाहिए।

अगली बात यह कि विधायिका का काम भी थोड़ा सीमित रहे अधिक से अधिक कानून ना बनाये। हर महीने, हर स्तर में कानून का बोझ न्यायपालिका पर डालते हैं। यह भूल जाते हैं कि जैसे ही कानून बनायेंगे न्यायपालिका के ऊपर बोझ बढेगा, केस बढ़ेंगे, लेटिगेशन बढ़ेगी, विवाद बढ़ेंगे तो जज ज्यादा चाहिए। कोर्ट के रूम चाहिए। अन्यथा फैसले देने में देरी शुरू हो जाती है तो विधायिका और सरकार को चाहिए कि ऐसे कानून रद्द करे, कानूनों की संख्या घटाये, कानून बहुत अच्छी तरह से सुयोग्य, जानकार, न्यायविदों द्वारा तैयार हो ताकि उसमें अस्पष्टता न रहे, कानून में इनिपिटेशन की जगह ना पड़े, कानून में बिना मतलब के विवादों को जन्म ना दे अनुपालना से। सरकार को चाहिए जनता को कानून की बढ़ती संख्या के बोझ से घटाये और राहत दे।

अब एक प्रश्न यह भी उठता है कि जब निचली अदालतों में फैसले सही नहीं होंगे तो फिर ऊपरी अदालतों में भार बढ़ता जायेगा। यह विवाद अगले फॉर्म में कानून के लिए पुनः प्रभावित हो। अगर ज्यादा अपील हो रही है इसका तात्पर्य कि निचली अदालतों में काम ठीक नहीं हो रहा है या जज जो है सक्षम नहीं। तो नीचे की अदालतों में सबसे ज्यादा सुधार हो ताकि कम से कम माले समीक्षा के लिए अपील में हाईकोर्ट और सुप्रीम कोर्ट में जायें। यह भी देखने में आ रहा है कि राज्य सरकार को, स्थानीय न्यायपालिका हो, पंचायत हो, केन्द्र सरकार हो, सरकार के प्रतिष्ठित हों, राजस्व विभाग के लोग हों, पुलिस के लोग हों जिन्हें न्यायालय के फैसलों को मानना चाहिए। अधिक से अधिक पहले फैसले ऊँची अदालत के फैसले को मानना चाहिए। जब यह सरकार ही सबसे बड़ा विवाद पैदा करने वाली संस्था है, सबसे ज्यादा झगड़े के साथ और सरकार के द्वारा होते हैं वही अदालतों को सच्चा नहीं माने उनकी ना सुने और आगे से आगे केस बढ़ाते रहे। लोकल कोर्ट से प्रोविजन या फिर हाईकोर्ट में या सुप्रीम कोर्ट में प्रोविजन तो सरकार की पॉलिसी ठीक नहीं है। हमेशा कहते हैं कि सरकार न्यायपालिका में पूरा विश्वास रखती है और उनका अक्सर पालन करेगी। लेकिन फिर से अपने खिलाफ हुए फैसलों के लिए ऊपर के फॉर्म में जाती रहती है। सरकार खुद एक उदाहरण बनाये कि जो फैसला न्यायपालिका से मिला वह मान्य होना चाहिए। अगर नीचे की अदालत न्यायालयों से या हाईकोर्ट से सुप्रीम कोर्ट से या कोई भी अथॉरिटी से समीक्षा के लिए फैसले आते हैं उसका मतलब है कि अधिक से अधिक फैसले उल्टे हो रहे हैं। इसका तात्पर्य है कि जुडिशियल सिस्टम में हाईकोर्ट या नीचे के अदालत के लेवल पर काम ठीक तरह से नहीं हो रहा है। उसकी कमियों को समीक्षा करके, विश्लेषण करके और अच्छे से अच्छे लोगों की नियुक्ति करके सही करना चाहिए।

तीसरी बात यह भी है कि जब तक ऊपर की अदालतों में से सही फैसले की उम्मीद नहीं होगी और वो प्रोसिजर अधिक महंगा नही होगा तभी वादिक हिम्मत कर सकता है। अन्याय के प्रति विरोध करने की अगर उसे पता है कि ऊपर की अदालत में फैसले बदले नहीं जायेंगे, न्याय आधारित नहीं होंगे तो फिर वो अन्याय के लिए नीचे की अदालत या सरकारी संस्थानों के अन्याय का प्रतिरोध नहीं कर सकता है। उसकी प्रतिरोध करने की क्षमता सही होनी चाहिए। समीक्षा महंगी नहीं होनी चाहिए। निःशुल्क होनी चाहिए। वकीलों की फीस भी एक न्यायिक प्रक्रिया में बंधी बनी हुई है। अनाप–शनाप फीस वसूल करते हैं। मोवक्कीलों को लटकाये रखते हैं इसलिए और भी गलत है।

हालाँकि न्यायपालिका का कहना है कि कोई निर्दोष व्यक्ति को दंड ना मिले। लेकिन आप देख रहे हैं कि लोगों की संख्या में गरीब दोषी दोषारोपित व्यक्ति जेल में बंद हैं। उसके पास बल देने के लिए जमानत देने वाला कोई नहीं है। या जमानत के लिए उसके या उसके परिवार के पास राशि नहीं है तो वो प्रताड़ित होता रहता है जेल में। मामला लम्बित पड़ा रहता है २०–२० या ३०–३० साल में बिना केस को आगे बढ़ाये लाखों लोग आज भी बिना किसी जुर्म किए दंडित हो रहे हैं। प्रताड़ित हो रहे हैं। जेलों में भरे पड़े हैं। यह सरकार के लिए अनावश्यक खर्च है, अनावश्यक भार है और इस व्यवस्था को ठीक करना चाहिए। समय सीमा बाधित होनी चाहिए और ऐसे मामलों में जमानत या तो दी जाये या फिर फैसला जल्दी से किया जाये। यह एक अति भ्रष्ट प्रणाली का अनूठा उदाहरण है जोकि न्याय प्रक्रिया धीरे होने, दोषी होने या काफी समय से लटके रहने की वजह से होता है। अभी हाल ही में न्यायपालिका और कार्यपालिका, न्यायपालिका और विधायिका की मामले टकराव के हस्तक्षेप के जगजाहिर हुए हैं। यहाँ तक कि बात आगे आई कि न्यायपालिका को कोर्ट की कोई सुनता ही नहीं है। इसका मतलब यह हुआ कि कोर्ट का कोई डर ही नहीं है। सरकार भी कहने को कहती है कि हम न्यायपालिका का सम्मान करते हैं लेकिन बहुत से केसिज में जैसे कि राजनीति में निरअपराधीकरण के लिए बार–बार संदेश दिए गए और सरकारों ने,

शेष पृष्ठ 11 पर

इतिहास स्वयं को दोहराता है

✍ प्रो० ए०पी० सारस्वत

(पिछले अंक का शेष)

इस्लामिक ३ माह की छूट : मार्च से जून ६३१ ए. डी. में काबा के मन्दिर में (अरेबिया) :

विश्वासघात और पीठ में छुरा भौंक देना एक काली घटना के रूप में अचानक यात्रिव (मदीना) के निवासियों के जीवन में उतरा जो मुख्य रूपसे यहूदी

थे। इस विश्वासघात की योजना मुहम्मद और उनके स्थानीय संयोजक अंसारियों द्वारा पिछले एक वर्ष से बनाई जा रही थी। मुहम्मद द्वारा अपने और मदीना के यहूदी निवासियों के बीच हुई शान्ति संधि ६२२ ई. को तोड़ने के हर प्रयत्न किये जा रहे थे। एक दिन ६२५ ई. (४ हिजरी) को एक यहूदी दुकानदार पर एक बेहूदा इल्जाम लगाया गया कि उसने एक मुस्लिम लड़की को छेड़ा है और यहूदी दुकानदार तथा मदीना के यहूदियों पर मुस्लिम हथियारबंदों द्वारा आक्रमण कर दिया गया। यह एक पूर्ण आक्रमण था, पूर्व नियोजित, अचानक, बिना किसी आशंका के और अत्यन्त निर्दयी। उन्होंने कहा—''ओ मुहम्मद! हमारे घर असुरक्षित हैं''१ परन्तु रक्तपिपासु अन्य ही योजना बनाए हुए थे।

मदीना के सब बन्दियों को दो कैम्पों में रखा गया—६०० पुरुष एक कैम्प में और भूखे-प्यासे स्त्री एवं बच्चे दूसरे कैम्प में। इस तरह वे एक रात रखे गये। दूसरे दिन ६०० पुरुष यहूदी कैदी ५-६ के झुंड में ले जाये गये और मदीना के मुख्य बाजार में पहिले से तैयार खाइयों में कत्ल करके डाल दिये गये।२ इनमें एक यहूदी स्त्री भी थी जिसने लड़ाई में मुहम्मद के मुँह पर एक पत्थर का लोढ़ा मारा था। इस समस्त निर्दयी कृत्य को मुहम्मद ने स्वयं निर्देशित और आदेशित किया था, जिसे अल्लाह के द्वारा सातवें आसमान से निर्देशित करना बताया गया। शीघ्र ही इसके बाद, भूखी और प्यासी बन्दी यहूदी स्त्रियों और रोते बच्चों को घसीट कर इस्लामी सैनिकों में बाँट दिया गया और मुहम्मद के हिस्से में आई स्त्रियों को गुलामों की तरह बेच दिया गया। एक बन्दिनी 'रेहाना', जिसका पूरा परिवार कत्ल कर दिया गया था, मुहम्मद की नजर में चढ़ गई और तुरन्त एक 'वही' उन पर उतरी जो मुहम्मद पर एक विशेष अनुकम्पा अल्लाह की थी।

''ओ पैगम्बर! हम (अल्लाह) तुम्हें उन पत्नियों को देते हैं जिनको तुमने मेहर दिया है और उन-उन गुलाम दासियों को जिन्हें तुमने युद्ध में हासिल किया है''३ और मुहम्मद ने रेहाना को अपने लिए रख लिया।

इस तरह मदीना के बानू खारिजा कबीले का ईस्वी ६२५ में एक भाग्य निर्णायक दिन दर्दनाक अंत हुआ। शीघ्र ही अरेबिया के कबीलों का सामूहिक कत्लेआम दैनिक आदेश और नवधर्म (इस्लाम) का विश्वास बन गया और पकड़े गये स्त्री एवं बच्चों की गुलाम के रूप में बिक्री इस्लामी सैनिकों का एक मान्य–जायज जीवनयापन का तरीका बन गया। मक्का के नजदीकी शहर ताइफ के मनात एवं उज्जा देवी के प्रसिद्ध मंदिर एवं शहर पर ६३० ईस्वी में हमला किया गया। वहाँ के जजिया कबीले ने बहादुरी से मंदिर एवं शहर की रक्षा करते हुए आत्मसमर्पण करने तथा इस्लाम स्वीकार करने से इंकार कर दिया तो समस्त पुरुषों को कत्ल कर दिया गया। अब मुहम्मद ऐसे कृत्यों एवं ऐसे मौकों पर अपने हीन कृत्यों को छुपाने के ढोंग सीख गये थे, उन्होंने कहा—''ओ मेरे अल्लाह! मैं निर्दोष हूँ।'' **इस मौके पर उन्होंने पकड़े गये स्त्री-बच्चों को गुलाम के रूप में नहीं बेचा था वरन् मुसलमान सैनिकों में बाँट दिया।**—''तुम्हें अधिकार है. .. जिसे भी तुम्हारा सीधा हाथ पकड़ ले।''

अनेकों सम्पूर्ण कबीले, बस्तियाँ और कस्बे अरेबिया और मानव सभ्यता के मानचित्र से इस तरह लुप्त कर दिये गये कि भविष्य में मानव सभ्यता कभी भी पता नहीं लगा पाएगी कि कभी वे मौजूद भी थे। इस तरह उतरी वह गहरी कालिमा, निर्दयी और हत्यारी, धीमे कदमों परन्तु निर्धारित कदमों के साथ पूर्ण अरेबिया की सभ्यता को हड़पते हुए, किसी भी मौके के लिए कुछ भी न छोड़ते हुए। इसका पटाक्षेप अभी आना था, केवल एक वर्ष बाद ही।

वह आखिरी पूजा :

मार्च ६३१ ईस्वी (हिजरी ६) वह महीना था जब उपर्युक्त घटना का आखिरी पर्दा दर्दनाक तरीके से खींच दिया गया और तलवार को नवधर्म (इस्लाम) को आगे बढ़ाने तथा भविष्य के दिशा–निर्देश का आदेश दिया गया। काबा के मन्दिर को पहले ही अधिकार में ले लिया गया था और **काले पत्थर (?) के अतिरिक्त ३६० अन्य देवताओं की मूर्तियों को तोड़ दिया गया था।** अब ६३१ ईस्वी में मुहम्मद ने एक और दानवी आदेश जारी किया—''अब से ३ माह बाद (यानि जून ६३१ ई. के पश्चात) कोई भी मूर्तिपूजक मक्का में धर्म यात्रा नहीं कर सकेगा और न काले पत्थर की परम्परागत ढंग से पूजा कर सकेगा।''५ इसके बाद इस पवित्र क्षेत्र में या इसके बाहर **काफिर और अविश्वासों के विरुद्ध युद्ध घोषित कर दिया जाता है—''उन्हें मार दिया जाना है, पकड़ लिया जाना है, उनकी घात में बैठना है जहाँ भी वे पाए जायें।** ''यह एक आदेश था, यह नवधर्म (इस्लाम) की आत्मा थी, यह मूल आस्था थी जो स्थापित की गई भविष्य में सदैव अनुकरण के लिए। यह घोषित था नवधर्म (इस्लाम) के लिए और उसके पैगम्बर के लिए।

उस वेदना और मनोदशा को बताना किसी भी भाषा में मुश्किल है जो उन ३ महीनों में मक्का और अरेबिया के नागरिकों की रही जिसमें उन्हें अपने आराध्य की पूजा करने का आखिरी मौका दिया गया। उनके आराध्यदेव **'श्याम पत्थर (लिंगम)'** को शीघ्र ही मुस्लिम कहे जाने की घोषणा होनी थी और सब पूजा–क्रियाओं को उल्टे क्रम में प्रारम्भ किया जाना था।

काबा की परिक्रमाएँ उल्टे क्रम में सीधे हाथ से उल्टे हाथ की ओर करनी है न कि उल्टे हाथ से दाहिने हाथ की ओर जैसे कि हिन्दू पद्धति में की जाती है। 'लिंगम' के शीश पर कोई दूध-मिश्रण अब अर्पित नहीं करना है, काबा की जलहारी जिसमें दूध मिश्रित चढ़ा जल बहता था, जिसमें श्रद्धालु उंगलियाँ डुबोकर माथे एवं आँखों पर लगाते थे, पूरी तरह बन्द कर दी गई थी। जलहारी की बाहरी हौदी जो मन्दिर का ही एक हिस्सा थी, इस तरह तोड़ दी गई थी जैसे कि यह कभी भी मन्दिर के हिस्से का एक अंग नहीं थी। कोई भी मिट्टी का दीपक नहीं जलाया जा सकता था, प्रार्थनाएँ संगीतमय रूप में गाना बन्द करवा दिया गया था और न कोई प्रार्थना काबा में की जा सकती थी। नई प्रार्थना नमाज की प्रारम्भ की गई थी। सब पीतल-तांबे की घंटियाँ संगीत के वाद्ययंत्रों के साथ ही तोड़ दी गई थीं।

अरेबिया के निवासियों को जो मुहम्मद की निगाह में मूर्तिपूजक और आदिवासी (पैगन) थे, को केवल दो ही विकल्प दिये गये थे—**''या तो वे इस्लाम स्वीकार करें या मौत को स्वीकार करें''।** 'किताबों वाले व्यक्ति (The People of the Book) —ईसाई, यहूदी, सेबियन एवं मैजीयन, अपने धर्म का पालन कर सकते हैं बशर्ते वह जजिया कर देना स्वीकार करें (इस्लामी राज्य का सुरक्षा कर) लेकिन मूर्तिपूजक, जैसा कि प्रमाण संकेत करते हैं कि उनमें हिन्दू भी हो सकते थे,७ को बर्दाश्त नहीं किया जा सकता था और वे अपना धर्म तथा मूर्तिपूजा को नहीं कर सकते थे। **काबा में मूर्तिपूजा बन्द कर दी गई और काबा का काला पत्थर अब सब के द्वारा पूज्य नहीं रहा। अब वह केवल मुसलमानों का देवता रह गया था,** यह केवल इतिहास और भाग्यचक्र की व्याख्या के लिए छोड़ दिया गया है कि क्या कभी यह अपने मूलपूजक अनुयायियों के द्वारा पुनः प्राप्त किया जा सकेगा?

(शेष अगले अंक में)

दान/सहयोग सहायता द्वारा इन्द्रदेव, बुलन्दशहर माह आश्विन विक्रमी सम्वत् २०७४ (सितम्बर-अक्टूबर २०१७)

1.	श्री छट भवानी अखाड़ा, बुलन्दशहर	101/-
2.	श्री दुर्गा मन्दिर, बुलन्दशहर	1100/-
3.	श्री महाचण्डी कमेटी, बुलन्दशहर	250/-
4.	राष्ट्रीय कोहिनूर, एटा	1000/-
5.	महर्षि बाल्मीकि प्रकटोत्सव/शोभा यात्रा	101/-
6.	दि मॉरल, कानपुर	500/-
7.	हिन्दू सभा वार्ता नई दिल्ली	2550/-
8.	अ० भा० हिन्दू महासभा, नई दिल्ली	151/-
	टोटल	5753/-

इन्द्रदेव गुलाटी, संस्थापक, सावरकरवाद प्रचार सभा, बुलन्दशहर

महान क्रान्तिकारी देशभक्त तथा आर्यसमाजी विद्वान देवतास्वरूप भाई परमानन्द इस युग के हिन्दू एवं हिन्दुत्व के विरुद्ध विषैला वातावरण उत्पन्न किया जा रहा है। हिन्दू आतंकवाद व भगवा आतंकवाद जैसे झूठे मुद्दे उछालकर हिन्दू–संस्कृति को जड़मूल से समाप्त कर डालने के प्रयास जारी हैं, इसी प्रकार भाई परमानन्द जी के समय भी कॉंग्रेस ने मुस्लिम तुष्टीकरण की नीति को ग्रहण कर हिन्दू को साम्प्रदायिक, संकीर्ण एवं दकियानूसी बताकर उसके विरुद्ध विषवमन प्रारम्भ कर दिया था। उस समय हिन्दू महासभा एवं राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ये दो संगठन ऐसे थे जिन्होंने विपरीत परिस्थितियों में भी प्रसन्न करने के लिए "हम हिन्दू नहीं, हिन्दुस्तानी है," जैसा प्रचार भी प्रारम्भ कर दिया गया। ऐसे समय में भाई जी ने हिन्दू महासभा के मंच से घोषणा की –

"इस गाँधीवाद की चल रही हिन्दू घातक, मुस्लिम पोषक आँधी के समक्ष मैं अपनी आत्मा को नहीं दबा सकता। मैं हिन्दू हूँ, हिन्दू की सन्तान हूँ, आजन्म हिन्दू कहलाऊँगा, हिन्दुस्तानी नहीं।" उन्होंने घोषणा की "अगर हमदर्दिये हिन्दू निशानी कुफ्र की ठहरी मुझे यह कुफ्र देता जा मेरा ईमान लेता जा।" जो लोग हिन्दुओं को केवल धार्मिक कार्यों में लगे रहकर राजनीति में अलग रहने का उपदेश देते थे उन्हें भाई जी ने हैं उसी प्रकार सन् 1946 में गाँधी जी ने हिन्दू–मुस्लिम एकता के लिए हिन्दू एवं हिन्दू हितों को बलिदान करने में कोई कसर नहीं छोड़ी। भाई जी ने साप्ताहिक "हिन्दू" के 5 नवम्बर 1946 के अंक में "हिन्दुओं को बेचकर क्या मिला?" शीर्षक लेख में हिन्दू–मुस्लिम एकता की विफलता का प्रकाश डालते हुए लिखा

गाँधीजी और उनकी संस्था ने अपने आन्दोलन की नींव इसी आधार पर रखी थी कि जब तक हिन्दू–मुस्लिम एकता नहीं होती, स्वराज्य मिलने की कोई सम्भावना नहीं हो सकती। पच्चीस वर्ष के बाद हम क्या देखते हैं? गाँधी जी और उनके साथ बताते हैं कि भारतवर्ष स्वतन्त्रता मिलने में दो–तीन वर्ष लगेंगे और यदि संविधान सभा में स्वतन्त्रता न मिली तो हम फिर से स्वतन्त्रता का युद्ध आरम्भ करेंगे। इसके साथ ही अग्रगामी दल बताता है कि यह संविधान सभा केवल धोखा है। अग्रगामी दल वही संस्था है जिसे सुभाष बाबू ने स्थापित किया था। इस प्रकार के मतभेदों को सर्वथा उपेक्षित करके हम देखना चाहते हैं कि स्वतन्त्रता मिलेगी कैसे? श्री जवाहरलाल तो कहते हैं कि वर्किंग कमेटी के "भारत छोड़ो" प्रस्ताव के बाद जो गड़बड़ी हुई उससे घबराकर गवर्नमेंट ने स्वतन्त्रता देने की घोषणा की। साधारण जनता कहती है कि स्वतन्त्रता अमुक दल के बलिदान के के लोगों का विशेष आचरण है। जब कभी उनके विरुद्ध बगावत की गई या क्रान्तिकारी आन्दोलन चलाया गया तभी अंग्रेजों ने उसको दबाने का प्रयत्न किया है। जब युद्ध में इंग्लैण्ड सफल हुआ तो उसने देखा कि भारतवर्ष के लोगों में भी स्वतन्त्रता की कामना है और संसार की दूसरी जातियाँ भारतवर्ष पर अंग्रेज अधिकार देखकर जलती हैं। अब उसने संसार को यह दिखाना चाहा कि भारतवर्ष को भी एक प्रकार की स्वतन्त्रता प्राप्त है, किन्तु इस बात से इंग्लैण्ड की सब पार्टियाँ सहमत न थी। केवल लेबर पार्टी इसके पक्ष में थी। लेबर पार्टी की विशेष नीति हैं जब सन् 1919 के महायुद्ध में ब्रिटेन को

हिन्दू राष्ट्र के स्वप्न द्रष्टा देवतास्वरूप भाई परमानन्द जी

✍ शिवकुमार गोयल

हिन्दू संगठन के कार्य को आगे बढ़ाया। एक और कॉंग्रेस मुस्लिम तुष्टीकरण की नीति के कारण हिन्दुत्व के पीछे हाथ धोकर पड़ी थी, तो दूसरी ओर कुछ आर्य समाजियों ने "हम हिन्दू नहीं आर्य है" का अभियान चलाया था। भाई परमानन्द जी यद्यपि हिन्दू महासभा के साथ–साथ आर्य समाज के भी प्रमुख नेता थे, तथापि उन्होंने इतिहास का गहन अध्ययन करने के बाद यह निष्कर्ष निकाला था कि यदि समस्त हिन्दू समाज को किसी एक नाम पर एकत्र किया जा सकता है तो "हिन्दू" शब्द ही हो सकता है। हिन्दू शब्द को मुसलमानों की देन अथवा निन्दनीय बताने वालों की भर्त्सना करते हुए भाई जी ने लिखा –

"हिन्दू हमारे लिए एक नाम ही नहीं है, इसके साथ तो आरम्भ से लेकर हमारी जाति का इतिहास बँधा है। इस नाम की महिमा बताने वाले हमारे कवि और अवतार हुए हैं। इसके लिए शास्त्रों और दर्शनों के रचयिता आये है। इसकी मानरक्षा के लिए हमारे वीर और क्षत्रिय युद्ध करते रहे। इसके लिए उन्होंने अपने प्राणों को वार दिया। उस समय गाँधीजी की आँधी अपने यौवन पर थी। गाँधीजी ने घोषणा की थी– "बिना मुसलमानों को साथ लिए स्वराज्य मिलना असम्भव है।" इस उद्घोष से प्रोत्साहित होकर मुस्लिमलीगी नेताओं ने शर्तों पर शर्तें रखनी आरम्भ की, गाँधीजी व कॉंग्रेस उनको स्वीकार कर लीगियों को प्रोत्साहित करती रही। गोहत्या की छूट व मस्जिदों के आगे बाजा बजाने की शर्त को स्वीकार करने के साथ–साथ "मुसलमान भाईयों" को उत्तर दिया कि हिन्दू जाति का अस्तित्व सदैव राजनीति पर आधारित रहा है। वे लिखते हैं –

संसार की जातियों में हिन्दू जाति ही एक जाति है जिसकी नींव धर्म पर ही नहीं अपितु राजनीति पर भी है। हिन्दू शब्द ही एक राजनीतिक शब्द है। हिन्दू का अर्थ वे लोग है जो हमारे देश की पृथ्वी के स्वामी हैं, इस देश को पु यभूमि मानते हैं। जो व्यक्ति ईसाई या इस्लामी मजहब को सामने रखकर हिन्दू शब्द का लक्षण उसी प्रकार ढूँढना चाहते हैं, वे गलती पर हैं। हिन्दुओं में ऐसे मत भी है जो जैन मत के समान ईश्वर का अस्तित्व ही नहीं मानते और ऐसे मत भी हैं, जो वेदान्तियों की तरह सब कुछ ब्रह्म ही ब्रह्म समझते हैं। जिन नियमों व सिद्धान्तों को वर्तमान धर्म अपनी नींव समझते हैं हिन्दू उनको दर्शनमात्र समझते हैं और इसके साथ ही प्रत्येक मनुष्य को इन पर स्वतन्त्रता से विचारने और भिन्न मत रखने का अधिकार देते हैं। अन्य मत हिन्दुओं से परिहास में कहते है कि हिन्दू क्या है? हम समझते हैं कि हिन्दू जाति को इस बात का अभिमान और गर्व रहना चाहिये कि इसका मस्तिष्क इतना ऊँचा रहा है कि आरम्भ से ही यह धार्मिक सिद्धान्तों की कैद से मुक्त रही। इसलिए हम कह सकते हैं। कि हिन्दू धर्म एक तरह की राजनीति ही रही है। श्री कृष्ण का जीवन एक राजनीतिक नेता का जीवन था। आज कॉंग्रेसी, कम्युनिष्ट, समाजवादी तथा अन्य कथित सेकुलर वोटों व सत्ता के लालच में हिन्दुओं की भावनाओं के साथ खिलवाड़ करने में नहीं हिचकिचा रहे। इस्लामी आतंकवाद को संरक्षण दिया जा रहा को अब स्वतंन्त्रता मिल गई है, किन्तु हिन्दू–मुस्लिम एकता का कोई चिन्ह दिखाई नहीं देता। एकता तो एक

और रही, मुसलमान तो यह कहते हैं कि भारतवर्ष के खण्ड कर दीं, क्योंकि हम हिन्दुओं के साथ रहना भी नहीं चाहते। प्रश्न होता है कि गाँधी जी का वह सिद्धान्त कहाँ गया? किन्तु हिन्दू–मुस्लिम एकता का विचार सर्वथा मिथ्या भ्रम सिद्ध हुआ है।"

राष्ट्र की स्वाधीनता का श्रेय किसे?

आज कॉंग्रेस की ओर से यह प्रचार किया जाता है कि भारत की स्वाधीनता गाँधी जी तथा अहिंसात्मक सत्याग्रह के कारण प्राप्त हुई। भाई जी ने इस विषय में विवेचना की– जो सिद्धान्त ये लोग स्वतन्त्रता के सम्बन्ध में बताते हैं, सर्वथा अशुद्ध हैं। प्रथम बात तो यह है कि नई योजना स्वतन्त्रता है या नहीं? आरम्भ में तो ये लोग प्रसन्न होकर कहने लगे, हमें स्वतन्त्रता मिल गई हैं बाद में कहने लगे स्वतन्त्रता का द्वार खुल गया है। अब भी जवाहरलाल की सम्मति है कि कारण प्राप्त हुई है। यदि हम थोड़ा–सा भी विचार करें तो पता लगेगा कि ये दोनों बातें गलत है। "भारत छोड़ो" प्रस्ताव के बाद जो थोड़ी बहुत गड़बड़ी हुई वह केवल बिहार, उत्तर प्रदेश और सी.पी. के कुछ जिलों तक सीमित थी। वह ठीक है कि गवर्नमेंट की ओर से इस गड़बड़ को दबाने के लिए बहुत सख्तियाँ की गई, किन्तु यह गड़बड़ सन् 1947 के आन्दोलन से कोई मुकाबला नहीं कर सकती। यह गड़बड़ अगस्त प्रस्ताव के बाद हुई। इसलिए श्री जवाहरलाल को वह प्रस्ताव और गड़बड़ बहुत महतवपूर्ण प्रतीत होते हैं। उन्हें यह ज्ञान ही कि सन् 14-15 में गवर्नमेंट के विरुद्ध विद्रोह का जो आन्दोलन आरम्भ किया गया था, वह सन् 1942 की गड़बड़ से कई गुना अधिक महत्व रखता है। अमरीका से आए हुए कई हजार हिन्दू क्रान्तिकारी कई वर्ष तक जेलों में नजरबन्द रखे गये। इनके अतिरिक्त कितने ही गोली से उड़ा दिए गये या फाँसी पर लटका दिए गए। शेष रहा बलिदानों का प्रश्न स्वतन्त्रता कही जाने वाली इस नई वस्तु के मिलने के बाद गाँधी जी बताते हैं कि उनके हृदय में गवर्नमेंट के विरुद्ध यों ही गलतफहमी थी, क्योंकि अंग्रेज तो स्वयं ही भारतवर्ष को स्वतन्त्रता की ओर ले जाना चाहते हैं। इसका स्पष्ट अभिप्राय यह है कि गाँधी जी का अपना सारा आन्दोलन सर्वथा व्यर्थ था और उसका कोई अच्छा फल नहीं निकला। श्री जवाहरलाल का यह विचार कि उन्होंने बाहुबल से स्वतन्त्रता प्राप्त की है, सर्वथा निरर्थक है। इंग्लैण्ड सफलता मिली तो पार्लियामेन्ट में यह घोषणा की गई कि भारत को ब्रिटिश उपनिवेश का भागीदार बनाया जाएगा। और इसके बाद निर्वाचन में अकस्मात् लेबर पार्टी जीत गई और इंग्लैण्ड में लेबर गवर्नमेंट बन गई। इस गवर्नमेंट ने हिन्दुओं को अवसर दिया कि वे देश के लिए कोई नया डैमोक्रेटिक संविधान प्रस्तुत करें। तब इरविन वाइसराय थे। इरविन के साथ सन्धि करने गाँधी जी लंदन गए, किन्तु गवर्नमेंट के प्रतिनिधियों से बातचीत करने की बजाय उन्होंने पहले मुसलमानों के साथ निर्णय करने का अवसर माँगा। परिणाम यह हुआ कि लेबर गवर्नमेंट के हट जाने पर नई सरकार ने भारत के भेद की नीति पर आचरण करके साम्प्रदायिक निर्णय दिया, जिससे भारतवर्ष में पराधीनता की जड़ें अधिक दृढ़ हो गई। दूसरे महायुद्ध के बाद भी इंग्लैण्ड में सरकार को सफलता मिली, उसने निर्णय किया कि भारतवर्ष को कुछ दिया जाए। किन्तु यहाँ तो साम्प्रदायिक निर्णय विद्यमान था। सरकार की बड़ी समस्या यह है कि साम्प्रदायिक प्रश्न को किस प्रकार सुलझाया जाये? वाइसराय इंग्लैण्ड की पुरानी नीति का पूर्ण रूप से छोड़ने के लिए तत्पर न था। उसका कॉंग्रेस पर दबाव स्थापित रहा। जब गाँधी जी बीमारी के कारण जेल से छोड़ दिए गए तो उनको चिन्ता हुई कि किस प्रकार कार्य समिति के शेष सदस्य भी छोड़े जाएँ? उन्होंने वाइसराय से मिलने का प्रयत्न किया। वाइसराय ने इससे इन्कार कर दिया। इसके बाद गाँधीजी के संकेत पर सर तेजबहादुर सप्रू ने सर्वदलीय सम्मेलन

शेष पृष्ठ 10 पर

ॐ कहो गर्व से, हम हिन्दू हैं ॐ

प्रतिष्ठा में,

श्री त्रिवेंद्र सिंह रावत जी,
माननीय मुख्यमंत्री, उत्तराखंड
४ सुभाष मार्ग, उत्तराखंड सचिवालय,
चौथा तल, नई बिल्डिंग,
देहरादून (उत्तराखंड)-२४८००१

विषय : देहरादून सहित उत्तराखंड के कुछ महत्त्वपूर्ण नगरों में चौराहों पर सम्राट भरत की प्रतिमाएं स्थापित कराने का अनुरोध।

महोदय,

कई दशक पहले के इतिहास, समाज शास्त्र, नागरिक शास्त्र आदि की पुस्तकों में यह पढ़ाया जाता था कि भारतवर्ष का नाम महादेवी शकुंतला पुत्र उन महावीर भरत के नाम पर पड़ा है जो अपने बचपन में सिंहों के मुँह खोलकर उनके दांत गिना करते थे। किन्तु जैसे–जैसे सेक्युलरवाद का ढोंग और सेक्युलरिस्टों का दबदबा बढ़ता गया तो कांग्रेसी सरकारों ने ऐसे सब स्वाभिमान सूचक अथवा स्वाभिमान वर्धक प्रकरण पाठय पुस्तकों से हटा दिए और अत्यंत प्राचीन गरिमामयी घटनाएँ पुस्तकों से बाहर निकाल दी और उनके स्थान पर उनकी भर्त्सना करने वाली शब्दावली पुस्तकों में शामिल करा दी। धीरे–धीरे सद्संस्कार मिटने लगे और कुविचार पनपने लगे। कांग्रेस पार्टी वामपंथियों और अतिवामपंथियों के चंगुल में फंसी हुई थी और धीरे–धीरे कांग्रेसियों का परंपरावादी और राष्ट्रवादी दृष्टिकोण मिटता गया और वामपंथियों का नकारात्मक चिन्तन उन पर हावी हो गया। राज्य की वर्तमान सरकार भारत की प्राचीन उत्कृष्ट विश्वव्यापिनी संस्कृति के उत्थान में लगी है और कुछ प्रयत्न इस दिशा में शुरू हुए हैं। इस प्रसंग में यह सुझाव है कि महान भरत (शकुंतला पुत्र) के बचपन की सिंहों के दांत गिनते हुए की प्रतिमाएं देहरादून सहित उत्तराखंड के महत्त्वपूर्ण नगरों के चौराहों पर स्थापित कराने का कार्यक्रम सरकार की ओर से आरंभ कराने का अनुरोध है। वामपंथियों की आलोचनाओं से बचने के लिए कुछ प्रतिमाएं सरकारी धन से स्थापित कराई जाएं और कुछ नगरों की नगर पालिकाओं से और कुछ की नगर निगमों के माध्यम से कराई जाएं। कुछ प्रतिमाएं सामाजिक संगठनों और सामाजिक दायित्वों के अंतर्गत गैर सरकारी कंपनियों के द्वारा भी स्थापित कराई जा सकती हैं। विश्वास है कि इस सुझाव पर शीघ्र विचार करके योजना बनवाने की और कार्यान्वयन की कृपा करेंगे। इस संबंध में की गई कार्रवाई की जानकारी भिजवाने का कष्ट करें।

सादर,

भवदीय

(चन्द्रप्रकाश कौशिक)	(मुन्ना कुमार शर्मा)	(वीरेश त्यागी)
राष्ट्रीय अध्यक्ष	राष्ट्रीय महासचिव	राष्ट्रीय कार्यालय मंत्री

तमिलनाडु जम्मू-कश्मीर, केरल एवं पश्चिम बंगाल की हिन्दू विरोधी सरकारों को बर्खास्त किया जाये-हिन्दू महासभा

अखिल भारत हिन्दू महासभा ने नई दिल्ली स्थित जंतर–मंतर पर तमिलनाडु, जम्मू–कश्मीर, केरल एवं पश्चिम–बंगाल सरकारों की हिन्दू विरोधी एवं राष्ट्रविरोधी नीतियों के विरोध में विशाल धरना–प्रदर्शन का आयोजन किया एवं तमिलनाडु, जम्मू–कश्मीर, केरल एवं पश्चिम बंगाल की हिन्दू विरोधी प्रदेश सरकारों को बर्खास्त कर राष्ट्रपति शासन लागू करने से संबंधित मांगों का ज्ञापन भारत के राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री एवं गृहमंत्री को सौंपा। धरना–प्रदर्शन में अखिल भारत हिन्दू महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष चन्द्रप्रकाश कौशिक, राष्ट्रीय महामंत्री मुन्ना कुमार शर्मा, राष्ट्रीय कार्यालय मंत्री वीरेश त्यागी, तमिलनाडु प्रदेशाध्यक्ष के. राजशेखर, दिल्ली प्रदेशाध्यक्ष सुनील कुमार, एस. तुलकापियन, वीजीधनलक्ष्मी, कुमुदाश्रीधरन, परमशिवम, विजय कुमार सहित सैंकडो हिन्दू महासभा कार्यकर्ता उपस्थित थे। सर्वप्रथम सैकडों हिन्दू महासभा कार्यकर्ता नारे लगाते हुए जंतर–मंतर पंहुचे। तमिलनाडु, जम्मू–कश्मीर, केरल एवं पश्चिम बंगाल सरकार को बर्खास्त करो, राष्ट्रपति शासन लागू करो। हिन्दू विरोधी गतिविधियों को बंद करो आदि नारे लगाये गये। अपने संबोधन में राष्ट्रीय अध्यक्ष चन्द्रप्रकाश कौशिक ने कहा कि कुछ प्रदेशों में आई.एस की गतिविधियाँ बढ़ गई हैं। वहां राष्ट्रविरोधी कार्य हो रहे हैं। इसे तत्काल रोकने की आवश्यकता है। राष्ट्रीय महासचिव मुन्ना कुमार शर्मा ने केन्द्र सरकार से तमिलनाडु, जम्मू–कश्मीर, केरल एवं पश्चिम बंगाल की राष्ट्रविरोधी सरकारों को बर्खास्त कर राष्ट्रपति शासन लागू करने की मांग की है। तमिलनाडु प्रदेशाध्यक्ष के. राजशेखर ने कहा कि तमिलनाडु में आई.एस व हिन्दू विरोधी शक्तियों की गतिविधियां बढ़ती जा रही हैं। परन्तु प्रदेश सरकार कोई कार्यवाही नहीं कर रही है।

(चन्द्रप्रकाश कौशिक)	(मुन्ना कुमार शर्मा)	(वीरेश त्यागी)
राष्ट्रीय अध्यक्ष	राष्ट्रीय महासचिव	राष्ट्रीय कार्यालय मंत्री

शेष पृष्ठ 9 का **हिन्दू राष्ट्र के स्वप्न .....**

बुलाया। इसका उद्देश्य गवर्नमेंट को यह बताना था कि काँग्रेसी नेता मुसलमानों को समान प्रतिनिधित्व देने पर तैयार हैं। न केवल यह अपितु गाँधी जी ने श्री राजगोपालचारी को आदेश दिया इस पर वह आश्चर्य चकित हुए। किन्तु जब गाँधी जी ने कहा कि राजगोपालचारी ने मेरी अनुमति के अनुसार यह कार्य किया है तो लोगों ने गाँधीजी पर दोषारोपण न किया। इसके बाद गाँधी जी ने अपने मित्र मूला भाई देसाई को आदेश दिया कि वे मुसलमानों के साथ गठबन्धन करके वाइसराय को बताएं कि काँग्रेस सरकार की भेद–नीति को स्वीकार करने पर तैयार है। देसाई दो–तीन मास तक इस काम में लगे रहे, किन्तु इसको सर्वथा गुप्त रखा। जब वाइसराय को विश्वास हो गया कि गाँधी जी मुसलमानों को हिन्दुओं के समान प्रतिनिधित्व देने पर तैयार है तो वाइसराय लन्दन गए और वर्किंग कमेटी की सदस्यों को छोड़कर काँग्रेस के साथ सन्धि करने पर तैयार हो गए। यह कार्यवाही लेबर गवर्नमेंट के परामर्श से हुई। नया संविधान भी इसी कार्यवाही का परिणाम है। भाई जी लिखते हैं – गाँधी जी और उनके दल ने हिन्दुओं को बेचकर हिन्दू–मुस्लिम एकता स्थापित करनी चाही, किन्तु उनका सारा परिश्रम व्यर्थ गया। उसी प्रकार इस दल के सब राजनैतिक आन्दोलन और कथित बलिदान सर्वथा व्यर्थ गए।

निर्भान्त हिन्दू राष्ट्रीयता के समर्थक

आज भले ही गाँधी–नेहरू की आँधी में इस स्वाधीनता का श्रेय काँग्रेसी नेताओं को देकर इतिहास के साथ खिलवाड़ कर रहे हों किन्तु भाई जी उन निर्भीक व तेजस्वी इतिहासकारों में से थे जिनकी लेखनी ने किसी राष्ट्रद्रोही, धर्मद्रोही तथा जातिद्रोहो को क्षमा नहीं किया। उन्होंने हिन्दू राष्ट्र की संस्कृति, धर्म, जाति व देश के साथ विश्वासघत करने वालों का स्पष्ट शब्दों में भाण्डा फोड़ा। "हिन्दू–मुस्लिम एकता" के विनाशकारी व भ्रान्त सिद्धान्त के कुपरिणामों से उन्होंने देश की जनता को परिचित कराकर अपना कर्त्तव्य पूरा किया। भले ही अभागी हिन्दू जनता ने उनकी चेतावनी की उपेक्षा की। उन्हें साम्प्रदायिक, दकियानूसी तथा संकीर्ण की उपाधि से विभूषित किया गया, किन्तु वीर सावरकर एवं भाई परमानन्द ने "साम्प्रदायिक" की उपाधि को गौरव के साथ स्वीकार करके देश की अभागी हिन्दू जनता को खतरे से सावधान करने में कोई कसर उठा नहीं रखी। भाई जी प्रायः कहा करते थे कि यह ठीक है कि मुसलमान पहले हिन्दू ही थे तथा वे हमारे सामज के अंग हैं, किन्तु जिस प्रकार शरीर में दो प्रकार के कीटाणु होते है एक स्वास्थ्य के व दूसरे रोग के। उसी प्रकार ये रोग के कीटाणु है। स्वास्थ्य के कीटाणुओं को प्रबल करना आवश्यक है उसी प्रकार हिन्दू संगठन परमावश्यक है।

हिन्दुत्व का अपमान असहय था

प्रो. धर्मवीर जी ने ठीक ही लिखा है–"देवतास्वरूप भाई परमानन्द जी के अन्दर हिन्दू शब्द के लिए अत्यन्त श्रद्धा थी। यह उन्हें प्राणों से भी अधिक प्रिये था। वे इसका अपमान कदापि सहन नहीं कर सकते थे। सीमाप्रान्त में जब किसी हिन्दू लड़को का अपहरण किया जाता तो उन्हें आग लग जाती। दक्षिण में जब किसी हिन्दू को पतित कर ईसाई बना लिया जात तो वे अन्दर ही अन्दर जलने लगते। श्रीमती सरोजनी नायडू लाहौर आयी तो सर फजल हुसैन के यहाँ ठहरी। सायंकाल जनता के समक्ष उनका कविता पाठ हुआ, रात को सर फजल हुसैन के मित्रों के साथ शराब का दौर चला। वे दक्षिण अफ्रीका गयी तो मुस्लिम बोहरों ने सोने के कड़े उपहारस्वरूप पेश किए। हिन्दुत्व का यह अपमान भाई जी के लिए असह्य था।

कश्मीर नरेश और भाई परमानन्द

अण्डमान (कालापानी) की जेल में वीर सावरकर आदि के साथ घोर यातनाएँ सहन करने के बाद महान इतिहासकार देवतास्वरूप भाई परमानन्द जी लाहौर लौटे तो बहुत दुबले–पतले हो चुके थे। चिकित्सक के परामर्श पर वे कुछ दिन के लिए श्रीनगर गए। भाई जी आर्यसमाजी थे। कश्मीर के महाराजा प्रतापसिंह उनकी ख्याति से सुपरिचित थे। वे सनातन धर्मसभा के संरक्षक थे। महाराजा ने भाई जी को सनातन धर्मसभा के महोत्सव में आमन्त्रित किया। भाई जी समारोह में पधारे तथा उनका विद्वतापूर्ण व्याख्यान सुनकर महाराजा गदगद हो उठे। महाराजा प्रतापसिंह ने मंच पर ही उनकी प्रशंसा करते हुए कह दिया कि मैं तथा राज्य की जनता मातृभूमि के लिए कालापानी में कष्ट उठाने वाले महान क्रान्तिकारी के दर्शनों से धन्य हो गई है। उसी शाम कश्मीर के अंग्रेज गवर्नर ने महाराजा को फोन कर ब्रिटिश शासन के एक जाने–माने विद्रोही का अभिनन्दन किए जाने पर नाराजगी जता दी। भाई जी को दूसरे दिन जब इस बात का पता चला तो उन्होंने एक पत्र महाराज के पास भेजा जिसमें उनके कारण हुए महाराजा के अपमान पर दुःख व्यक्त किया गया था तथा लिखा था कि वे कश्मीर छोड़कर लाहौर लौट रहे हैं। महाराजा ने जैसे ही पत्र पढ़ा कि भाई जी की महानता की अनुभूति कर उनकी आँखे नम हो गई।

शेष पृष्ठ 5 का **'क्या मानव जीवन की......**

स्वास्थ्य, पर्यटन, शिक्षा व प्राकृतिक अन्य संसाधनों से परिपूर्ण हैं इसलिए इन क्षेत्रों में विकास का लक्ष्य रखकर, वास्तविक विकास को बढ़ा सकते हैं। हम पर्यावरण समबन्धित रोजगारों से जुड़ कर स्वयं का व पर्यावरण का विकास कर सकते हैं। आईये, अब कुछ विचारणीय बिन्दु, जो हमें विकास व विनाश का गुणात्मक अध्ययन सिखाते हैं जैसे

❖ सदाबहार वृक्ष लगाये। ❖ जैविक खेती को बढ़ावा दें। ❖ मौसमी फल सब्जी का प्रयोग करें ❖ बोतल बंद पानी का प्रयोग कम से कम करें ❖ कपड़े का थैला लेकर चलें ❖ प्लास्टिक के सामान का बहिष्कार करें। ❖ कचरा यथा स्थान ही डालें ❖ अपने वाहन सही रखें ❖ खाद्य समूह बनाएं ❖ ऊर्जा को बचाएं। ❖ कचरा कम से कम इकट्ठा करें ❖ जल को जागरूकता से प्रयोग की प्रदूषण से बचाएं ❖ प्रत्येक व्यक्ति पौधा अवश्य लगाएं ❖ कांच रिसायकल के लिए दें ❖ पशु–पक्षियों को बचाएं ❖ अतिक्रमण से बचें ❖ आपदा प्रबंधन में सहयोगी बने ❖ नई तकनीकों का प्रयोग सोचसमझ कर करें ❖ कागज बचाएं ❖ जनसंख्या विस्फोट से बचें।

उपरोक्त बिन्दुओं पर गहन चिन्तन–मनन करते हुए स्वयं से प्रश्न भी करें कि पर्यावरण प्रदूषण में हम व आप कितनी भागीदारी रखते हैं और कैसे?

शेष पृष्ठ 6 का **भाई जी आज के......**

जीवन लगाया। भाई जी के जन्म दिन पर भाई परमानन्द स्मारक समिति द्वारा आयोजित, एक सभा को सम्बोधित करते हुए श्री अटल बिहारी वाजपेयी ने बड़े जोश के साथ कहा, "भाई जी देशभक्त थे, आज यदि वह जीवित होते तो हिन्दू–मुस्लिम एकता की बात करते।" क्या यह एक स्वर्गीय आत्मा के साथ अन्याय नहीं? क्या पाकिस्तान बन जाने के बाद भी देश में हिन्दू–मुस्लिम समस्या का दृश्य वही नहीं, जो संयुक्त भारत में 1930 से 1947 तक था। परन्तु राजनीतिज्ञों की सत्ता की भूख उन्हें कई गलत धारणायें व्यक्त करने पर बाध्य कर देती है। श्री अटल बिहारी वाजपेयी का विवेचन कहाँ तक सत्य सिद्ध होगा यह तो आने वाला समय ही बतायेगा। मगर भाई जी के मार्ग पर चलकर सोचने वाले किसी भी व्यक्ति को यह स्पष्ट दिखाई दे रहा है कि इस देश की समस्या 'हिन्दू–मुस्लिम एकता' से नहीं 'समस्त हिन्दू मात्र' को एक झण्डे तले लाकर ही सुलझेगी। जिस मृगतृष्णा के पीछे भाग–भागकर हमारे देश के स्वयंभू कर्णधारों ने अपना और देश का सर्वनाश किया है उसका श्री वाजपेयी को पूरा ज्ञान है यदि सब कुछ जानते हुए भी श्री वाजपेयी इस मृगतृष्णा के पीछे भागना चाहे तो उन्हें कौन रोक सकता है?

सावरकरवाद प्रचारसभा नई कार्यकारिणी

बुलन्दशहर ४ नवम्बर। सावरकरवाद प्रचार सभा की २०१७-१८ के लिए नई कार्य समिति का गठन इस प्रकार हुआ:-

संस्थापक	–	इन्द्रदेव गुलाटी
संरक्षक	–	डा० गिरीश चन्द्र गुप्त
अध्यक्ष	–	शैलेन्द्र जौहरी, एडवोकेट
उपाध्यक्ष	–	बलदेव राज वाधवा, सुशील गौड़
महामंत्री	–	सुनील कुमार आर्य
संगठन मंत्री	–	राजेश गोयल
प्रचार मंत्री	–	मूल चन्द गोयनका
वित्त मंत्री	–	सतीश चन्द गोयल
आय व्यय निरीक्षण मंत्री	–	रमेश चन्द वैदिक
विशेष आमन्त्रित	–	वेद प्रकाश अग्रवाल, महेश कुमार अरोरा, कुशलपाल सिंह, जानकीनन्दन

सावरकरवाद प्रचार सभा, बुलन्दशहर

साप्ताहिक हिन्दू सभा वार्ता

विशेषतायें जो अ‍न्‍यत्र नहीं मिलतीं

1. पत्रकारिता के उच्च राष्ट्रनिष्ठ मानकों के लिए प्रतिबद्धता
2. राष्ट्र और हिन्दुत्व को हानि पहुँचाने वाले कारकों पर पैनी दृष्टि
3. साम्प्रदायिक और पृथकतावादी सोच पर जमकर प्रहार
4. राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय मुद्दों पर पारदर्शी चर्चा
5. सामाजिक सरोकारों की तह तक जाकर समाधानपरक बहस
6. प्रेरक प्रसंग, महान् व्यक्तियों से प्रेरणा लेने का माध्यम
7. भ्रष्टाचार, अपराध और अंतर्राष्ट्रीय चिंतन पर तीखा आक्रमण

हमारा संकल्प

1. हम एक ऐसी समतामुलक राष्ट्रीय व्यवस्था के पक्षधर हैं जहां निर्धनता का अभिशाप न हो, किसी का शोषण न हो, न्याय वनपशुओं की चेरी न बने, सब समान हों, एक दूसरे के सहयोगी हों।
2. हम एक ऐसी संस्कृतिक व्यवस्था के पक्षधर हैं जिसमें हिन्दुत्व के सार्वभौमिक और सार्वकालिक सिद्धांतों को प्रतिष्ठित किया जा सके, जिससे कि हिंसा, पाप, शोषण, विषमता और संवेदनहीनता की कालिमा से विश्व को मुक्ति मिले।

केवल इतना ही नही, अन्य भी बहुत सी जीवनोपयोगी सामग्री। आपका साप्ताहिक, आपकी भावनाओं का दर्पण।

-: तत्काल ग्राहक बनें :-

सदस्यता शुल्क

वार्षिक..150/- रुपये
द्विवार्षिक.......................................300/- रुपये
आजीवन सदस्य..............................1500/- रूपये

ड्राफ्ट या मनीआर्डर
''हिन्दू सभा वार्ता'' के नाम भेजें।

पता **:- हिन्दू महासभा भवन, मंदिर मार्ग, नई दिल्ली-110001**

नोट **:- केवल स्थानीय चैक स्वीकार किये जाते हैं।**

शेष पृष्ठ 1 का **२०१६ में आतंकवादी हमले में.....**

पाकिस्तान और अफगानिस्तान में काफी कमी आई है। रिपोर्ट के अनुसार ७७ देशों में कम से कम एक घातक हमला हुआ। यह संख्या वैश्विक आतंकवाद डेटाबेस के १७ वर्षो के इतिहास में सर्वाधिक है, यह रिपोर्ट इसी डेटाबेस पर आधारित है। अमेरिका की यूनिवर्सिटी ऑफ मैरीलैंड द्वारा एकत्रित इन आंकड़ों को वैश्विक स्तर पर अपनी तरह के सबसे समग्र आंकड़ें समझा जाता है। जीटीआई ने कहा कि पीड़ितों की संख्या में गिरावट मुख्य सकारात्मक तथ्य है और कट्टरपंथी इस्लामी अतिवाद के खिलाफ लड़ाई में एक अहम मोड़ है। इसमें नाइजीरिया में सर्वाधिक सुधार देखा गया है जहां बोको हराम के कारण मारे गए लोगों की संख्या में पिछले साल ८० प्रतिशत कमी आई, लेकिन इस्लामिक स्टेट समूह के कारण मारे गए लोगों की संख्या में वर्ष २०१६ में बढ़ोतरी हुई है। इराक में सर्वाधिक ४० प्रतिशत बढ़ोतरी हुई है। जीटीआई ने आतंकवाद के वैश्विक स्तर पर फैलने को लेकर चिंताजनक बताया। वर्ष २०१५ की तुलना में पिछले साल १२ से अधिक देश घातक हमलों का शिकार बने। अफगानिस्तान में वर्ष २०१६ में तस्वीर जटिल रही। वहां तालिबान ने आम नागरिकों के खिलाफ हमले कम कर दिए लेकिन सरकारी बलों के साथ उसका संघर्ष बढ़ा। अखिल भारत हिन्दू महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष चन्द्रप्रकाश कौशिक, राष्ट्रीय महासचिव मुन्ना कुमार शर्मा एवं राष्ट्रीय कार्यालय मंत्री वीरेश त्यागी ने कहा है कि इस्लामिक आंतकवाद से लड़ने के लिये विश्व समुदाय को मिलकर हल खोजना होगा। इसे समाप्त करना विश्व समुदाय के लिये आवश्यक है।

शेष पृष्ठ 1 का **आतंकी संगठन इस्लामिक स्टेट ने.......**

दिया। कम से किसी आपको किसी ट्रेन को ही पटरी से उतार देना चाहिए या अपने चाकू का ही इस्तेमाल करना चाहिए। उल्लेखनीय है कि अमेरिका के लास वेगास में म्यूजिक कॉन्सर्ट में हुई गोलीबारी की जिम्मेदारी आतंकी संगठन आईएसआईएस ने ली थी। इस्लामिक स्टेट आतंकी समूह ने दावा किया है कि अमेरिका के लास वेगास में गोलीबारी की घटना को उसके एक सिपाही ने अंजाम दिया है जिसने कई महीने पहले इस्लाम स्वीकार कर लिया था। आईएस की दुष्प्रचार एजेंसी अमाक ने ऑनलाइन बयान में कहा, लास वेगास हमले को अंजाम देने वाला इस्लामिक स्टेट का एक सिपाही है और उसने जेहादियों के खिलाफ सैन्य कार्रवाई में शामिल देशों से बदला लेने के लिए इस कार्रवाई को अंजाम दिया गया है, हालांकि एफबीआई ने इसकी पुष्टि नहीं की। न्यूज एजेंसी एएफपी के मुताबिक ६/११ के बाद अमेरिका में हुए इस बड़े आतंकी हमले में ५० लोगों की मौत हुई है और ४०६ से ज्यादा लोग घायल हुए हैं। मृतकों और घायलों की संख्या बढ़ने की आशंका है। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने कहा, यह हमला पूरी तरह से एक शैतानी करतूत है। पूरे मामले की जांच हो रही है। पुलिस ने आरोपी हमलावर की पहचान ६४ वर्षीय स्टीफन पैड के तौर पर की है। तलाशी के दौरान आरोपी के कमरे से आठ बंदूकें बरामद हुई हैं, हमले के दौरान ही जवाबी कार्रवाई में स्वैट टीम ने आरोपी स्टीफन पैड को मार गिराया है। हमलावर ने म्यूजिक कॉन्सर्ट स्थल के बगल में मैंडले बे की ३२वीं मंजिल से गोलीबारी की थी। अखिल भारत हिन्दू महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष चन्द्रप्रकाश कौशिक, राष्ट्रीय महासचिव मुन्ना कुमार शर्मा एवं राष्ट्रीय कार्यालय मंत्री वीरेश त्यागी ने कहा है कि इस्लामिक स्टेट को वैश्विक स्तर पर समाप्त करना होगा। भारत सरकार, अमेरिका, यूरोप, रुस आदि देशों के साथ मिलकर वैश्विक रणनीति बनाये।

शेष पृष्ठ 7 का **अदालती और न्याय सुधार.....**

राजनैतिक पार्टियों ने सुप्रीम कोर्ट का फैसला उल्टा करने के लिए कानून बदल दिया। ऐसे अनेक उदाहरण हैं जहाँ कार्यपालिका या विधायिका दोनों मिलकर न्यायालय और उच्च न्यायालय के फैसलों को भी निरस्त कर देते हैं। इससे न्यायपालिका का एक तरह से चरित्रहनन होता है। आज के समय में अब न्यायालय की अवमानना का डर प्रायः खत्म हो चुका है। न्यायपूर्ति भी इसके लिए सीमित उदाहरण होंगे जब कम्प्रेट कोर्ट अवमानना के लिए दोषी व्यक्तियों को दंड दे। यह न्यायपालिका के लिए उचित नहीं है। उदाहरण के लिए ऐग्जामपलि पुनिशमेन्ट कम्प्रेट कोर्ट के केसिज में तुरन्त होने चाहिए। नहीं तो न्यायपालिका के न्याय, फैसले रद्दी टोकरियों में फेंकने के लायक हो जाते हैं। अगर दिवानी केस मामले तो न्यायपालिका को सिर्फ एक टिप्पणी दे करके बैठ जाना नहीं चाहिए। न्यायपालिका को, पुलिस को तुरन्त आगामी तारीख पर प्रतिवादी को बाधित करना चाहिए कि टिप्पणी के अनुरूप पालना करे और वादि को संतुष्ट करे। ऐसी बहुत सारी बातें हैं, प्रश्न हैं, जिनको न्यायपालिका को दुरुस्त करने, उसको प्रभावी करने, उस प्रक्रिया को सरल, सुगम और कम खर्चीली बनाने एवं उसकी विशिष्टता बढ़ाने के प्रयास जरूरी हैं। न्याय आधारित काम सरकार करे या विधायिका करे। यही एक लोकतंत्र की एक मूल भावना है। यही एक लोकतंत्र में नागरिकों का विश्वास है और यही एक अगर इसका उल्लंघन विधायिका या कार्यपालिका करती है तो उस पर अंकुश करने का काम न्यायपालिका का होता है। इसलिए न्यायपालिका का दुरुस्त होना और न्याय की प्रक्रिया को सरल, सहज और सुगम होना अति आवश्यक है। भारत सरकार को, संसद को, विधान सभाओं को इन बातों का संज्ञान लेते हुए न्यायिक कानूनों की संख्या घटाने का, नये कानून अति स्पष्ट, बिना लूटपाट के, बिना विवादास्पद इन्टरपिटेशन के बने। न्यायमूर्तियों की नियुक्ति सोच–समझ कर सही चरित्रवान, सत्याग्रह लोगों की हो। फैसले भी जल्दी होंगे और वह वादि को स्वीकार्य भी होंगे। सशक्त न्यायपालिका एक सशक्त विधायिका और कार्यपालिका को स्वतंत्र काम करने की गारंटी देता है।

विज्ञापन हेतु भारत सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त डी.ए.वी. नं.-124778 डाक पंजीकरण संख्या D.L. (N.D.)–11/6129/2016-17-18
नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिन बुधवार - बृहस्पतिवार रजि सं. 29007/77

यह भी सच है

बढ़ती मुस्लिम आबादी चिन्तन शील विषय

देश में लगातार बढ़ती मुस्लिम आबादी एक चिन्ता का विषय बन रहा है देश जब से स्वतन्त्र हुआ है इनकी जनसंख्या का ग्राफ बढ़ रहा है यह भारत के लिए शुभ संदेश नहीं है और ना ही हिन्दू समाज के लिए। मुस्लिम समाज जिसे मैं विदेशी धर्म भी कह सकता हूँ को सरकार अल्पसंख्यक का दर्जा देती है। वास्तविकता में मुस्लिम समाज से अल्पसंख्यक का दर्जा हटा दिया जाना चाहिए। सही माने मे तो जैन, बौद्ध, सिक्ख लोग अल्पसंख्यक है। वर्तमान में जो सरकार केन्द्र में है वो राष्ट्रवादी सरकार है मात्र इस सरकार से तो अपेक्षा की जा सकती है कि यह सरकार इस मुदद‌े को जनसंख्या नियन्त्रण कानून बना कर सुलझा सकती है। अगर केन्द्र सरकार ने इस विषय पर ठोस कदम नहीं उठाये तो घातक परिणाम हो सकते है। राजनीतिज्ञ लोग अपना उल्लू सीधा करने के लिए विदेशी धर्म (मुस्लिम) के लोगों को प्रोत्साहन करते है और अपने को धर्म निरपेक्ष बतलाने की कोशिश करते रहते है। ये लोग धर्म निरपेक्ष हो ही नही सकते धर्म निरपेक्ष का अर्थ होता है किसी धर्म का प्रोत्साहन न करना धर्म निरपेक्ष होता है। अक्सर चुनावी सभाओं में राजनीतिज्ञ कहते हुए मिलजाते है। कि मुस्लिम समाज का हित हमारी पार्टी में सुरक्षित है ये क्या है। क्या यही धर्म निरपेक्षता है। क्या इन राजनीतिज्ञ ने कभी किसी चुनावी सभा में जैन बौद्ध या सिक्ख धर्म के अल्पसंख्यकों के हित के बारे में भी यही शब्द बोले कि इनके हित हमारी पार्टी में सुरक्षित है। जितना सहयोग मुस्लिम समाज के लोगों के साथ करते है। क्या ये राजनीतिज्ञ बौद्ध, जैन या सिक्ख लोगों के साथ भी उतना ही मरते हैं क्या वास्तविकता मे जो अल्पसंख्यक है (जैन, बौद्ध, सिक्ख) इनके हित के बारे में तो शब्द नहीं बोलते। बल्कि जो विदेशी धर्म के अनुयायी है जो अपनी जनसंख्या लगातार बढ़ा रहे है। इनकी चिंता सबको है। केन्द्र सरकार को जनसंख्या नियन्त्रण कानून जल्द–से जल्द लाकर राष्ट्र व समाज के हितों को सुरक्षित करना होगा नही तो वो दिन दूर नही तो हिन्दू समाज अपने ही देश में ठगा सा महसूस करेगा और सम्पूर्ण समाज बेगाना हो जाएगा। सन ४८ के बाद इनकी जनसंख्या लगातार बढ़ रही है। हमारे देश में बेरोजगारी भी लगातार बढ़ रही है सरकार को चाहिए जनसंख्या नियन्त्रण कानून लागू कराये। इससे विदेशी धर्म के पालन करने वाले लोग जिनका उद्‌देश्य जनसंख्या को बढ़ाना ही है पर रोक लग सकती है। इस विषय पर ठोस कदम नहीं उठाये गये तो २० से ३० वर्षों में जो परिणाम आयेगें वो अत्यधिक घातक सिद्ध होंगे। पिछली सरकारों में तो तुष्टिकरण की भरमार रही है वो भी बम्पर भरमार। जिस सरकार के मंत्री आतंकी लादेन का सम्बोधन लादेन जी करके करते हो आकलन किया जा सकता है कि वे सरकारे कैसी होंगी। वर्तमान राष्ट्रवादी सरकार में तुष्टिकरण की नीति में कमी तो आयी है पर पूर्ण रूप से नही यदि सरकार जनसंख्या नियन्त्रण कानून बनाकर लागू कर दे तो बेरोजगारी जैसी अन्य समस्याए भी दूर हो सकती हैं। और देश खुशहाल हो सकता है।

पीयूष अरोड़ा

डॉ. अम्बेडकर द्वारा धारा ३७० का विरोध

डॉ. भीमराव अम्बेडकर अध्यक्ष, प्रारूप समिति जम्मू–कश्मीर को धारा–३७० के अंतर्गत विशेष दर्जा देने के खिलाफ थे। पंडित जवाहरलाल नेहरू ने उन्हें मनाने के लिए शेख अब्दुल्ला को उनके पास भेजा मगर डॉ. अम्बेडकर इसके लिए तैयार नहीं हुए तो पंडित नेहरू ने संविधान सभा के अन्य सदस्य गोपालस्वामी अयंगर को यह निर्देश दिया था कि विधि मंत्री की बजाय वह खुद धारा–३७० का प्रस्ताव संसद में पेश करें। संविधान सभा में भाषण देते हुए डॉ. अम्बेडकर ने धारा–३७० के तहत जम्मू–कश्मीर को विशेष दर्जा देने का विरोध किया था। समाचार पत्र के अनुसार संविधान सभा में भाषण देते हुए उन्होंने कहा था कि 'आप (शेख अब्दुल्ला) चाहते हैं कि हिन्दुस्तान आपकी सीमाओं की रक्षा करे। वो आपके क्षेत्र में सड़कें बनाये। आपको खाद्य–पदार्थ उपलब्ध करवाये। कश्मीर का वही दर्जा हो जो भारत का है लेकिन भारत सरकार के पास कश्मीर के बारे में सीमित अधिकार हो और हिन्दुस्तान के लोगों को कश्मीर में कोई अधिकार न हों। ऐसी योजनाओं की मंजूरी देना हिन्दुस्तान के हितों से दगाबाजी है। मैं भारत का विधि मंत्री होने के नाते ऐसा कभी नहीं करूँगा। हिन्दुस्तान में रहने के लिए सौदेबाजी करना उचित नहीं है। शेख अब्दुल्ला चाहते हैं कि भारत सरकार के कश्मीर में सीमित अधिकार हों। कश्मीरियों को पूरे भारत में बराबरी का दर्जा मिले और हिन्दुस्तान व हिन्दुस्तानियों को कश्मीर में बराबरी का कोई हक न मिले यह दुर्भाग्यपूर्ण और असम्भव है।'

कबिरा खड़ा बजार में

चीन को अब चाहिए मुंहतोड़ जवाब

अरूणाचल प्रदेश में भारत के शासन का चीन विरोध करता है। दूसरी ओर भारत इस विरोध को नजरअंदाज करता है और इस पूर्वोत्तर राज्य को अपना मानता है। रक्षा मंत्री निर्मला सीतारामन के अरूणाचल प्रदेश दौरे से चीन नाराज है। हालांकि इसके पहले जब दलाई लामा वहां गए थे तो ज्यादा शोर मचा था। चीन और भारत सीमा की वास्तविक रेखा को लेकर शायद ही कभी सहमत हुए। बीजिंग ने १९६२ में आक्रमण कर दिया जब भारत ने अपने इलाके वापस लेने की कोशिश की। हालांकि इस बार भारत ने डोकलाम के गतिरोध के समय अपनी ताकत दिखाई। चीन को अपनी फौज वर्तमान सीमा के भीतर ले जाना पड़ी। तनातनी के बाद सितंबर में ब्रिक्स के सम्मेलन में भाग लेने गए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने तनाव को कम किया। इस यात्रा का सकारात्मक पक्ष यह रहा कि दोनों देशों ने आतंकवाद से लड़ने का निश्चय दोहराया। लेकिन यहां भी चीन ने अपना रवैया दिखाया। इसने फिर से कुख्यात मसूद अजहर पर प्रतिबंध लगाने के संयुक्त राष्ट्र के प्रस्ताव को रोक दिया। उसे दंडित नहीं किया जा सका। चीन और पाकिस्तान की मजबूत हो रही दोस्ती भारत के लिए चिंता का विषय है। ज्यादा समय नहीं हुआ, जब चीन ने अरूणाचल से जाने वाले भारतीयों के वीजा को नत्थी करना शुरू कर दिया था। चीन यह दशार्ना चाहता था कि यह एक अलग क्षेत्र है जो भारत का हिस्सा नहीं है। नई दिल्ली ने इस अपमान को खामोशी से सहन कर लिया। अतीत में चीन ने अरूणाचल प्रदेश को भारत का हिस्सा दिखाने वाले नक्शों को बिना विरोध के स्वीकार कर लिया था। विवाद अरूणाचल और चीन के बीच के एक छोटे से क्षेत्र को लेकर था। अरूणाचल प्रदेश की स्थिति पर शायद ही सवाल खड़ा किया गया था। चीन के लिए तिब्बत वैसा ही है जैसे भारत का कश्मीर, जहां आजादी की मांग हो रही है। हालांकि एक अंतर है दलाई लामा चीन के भीतर एक स्वायत्त दर्जा स्वीकार करने के लिए तैयार हैं। कश्मीर आज आजादी चाहता है। शायद एक दिन कश्मीरी उसी तरह दर्जा स्वीकार करने को तैयार हो जाएंगे। समस्या इतनी जटिल है कि एक छोटा सा परिर्वतन भी बड़ी आपदा ला सकता है। यह जोखिम उठाया नहीं जा सकता है। तिब्बत पर चीन ने कब्जा कर लिया था। इसने तिब्बत की सस्कृति भी नष्ट कर दी है। चीन ने साम्यवाद थोप दिया है और दलाई लामा तथा उनके बौद्ध मठों के प्रति जरा भी आदर नहीं दिखाया। दलाई लामा की अरूणाचल प्रदेश की यात्रा ने उस समय की याद ताजा कर दी जब चीन ने तिब्बत पर अधिकार नहीं किया था। भारत के प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरू ने इस पर कोई आपत्ति नहीं की क्योंकि चीनी प्रधानमंत्री चूएन लाई के साथ उनके व्यक्तिगत संबंध थे। यह एक अलग कहानी है कि उन्होंने नेहरू से विश्वासघात किया और भारत पर आक्रमण कर दिया। चीन ने भारत की हजारों किलोमीटर जमीन पर कब्जा कर लिया और इसे खाली करने की कोई मंशा नहीं दर्शा रहा है। वास्तव में भारत के साथ चीन की समस्या की जड़ें भारत–चीनी सीमा का अंग्रेजों की ओर से किया गया निर्धारण है। चीन मैकमोहन लाइन को मानने से इंकार करता है जो अरूणाचल प्रदेश को भारत का हिस्सा दशार्ता है। इस क्षेत्र में होने वाली हर गतिविधि को चीन शक से देखता है। भारत के सामने यह स्थिति है कि बिना संघर्ष के इसका जवाबी प्रहार कैसे करे। बीजिंग भारत के साथ हिंदी–चीनी भाई–भाई वाला परिदृश्य वापस लाना चाहता है। नई दिल्ली चीन पर विश्वास नहीं कर सकता, खासकर उस समय जब वह भारत को चारों ओर से घेर रहा हो। सभी को यह समझना चाहिए कि भारत को अब यूं ही नहीं लिया जा सकता है। युद्ध के अलावा भारत के पास और भी विकल्प हैं।

वीरेश त्यागी

E-mail : viresh.tyagi@akhilbharathindumahasabha.org

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट की गई डाक पंजीकरण संख्या D.L. (N.D.)–11/6129/2016-17-18
रजि सं. 29007/77
साप्ताहिक हिन्दू सभा वार्ता
दिनांक 29 नवम्बर से 05 दिसम्बर 2017 तक

प्राप्तेषु

स्वत्वाधिकारी अखिल भारत हिन्दू महासभा के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक मुन्ना कुमार शर्मा द्वारा स्कैन 'एन' प्रिन्ट, 115, कीर्ति नगर इन्डस्ट्रीयल एरिया, दिल्ली मुद्रित तथा हिन्दू महासभा भवन, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 से प्रकाशित। दूरभाष 011-23365138, 011-23365354
E-mail : akhilbharat_hindumahasabha@yahoo.com, editor.hindusabhavarta@akhilbharathindumahasabha.org
सम्पादक : मुन्ना कुमार शर्मा, प्रबंध सम्पादक : वीरेश कुमार त्यागी
इस पत्र में प्रकाशित लेख व समाचारों की सहभागिता, संपादक-प्रकाशक की नहीं है। सम्पूर्ण विवादों का न्यायिक क्षेत्र नई दिल्ली है।